सो बूझे जिस आप बुझाए
भाग - ग तों छ

(निहकलंक हरि शब्द भंडार विचों)

सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै

गलती : परवरदिगार दा हुक्म हुंदा नहीं गलत, गलती विच्च कूड़ लोकाईआ। (१६ अस्सू श सं ६)

शंकर कहे मेरी बेनन्ती प्रभू दा इशारा, भोला नाथ हो के दस्सण आईआ। पैहलों करां दोए हत्थ जोड़ निमस्कारा, निमस्कार करनी सभ नूं दिआं सिखाईआ। फेर नेत्र मीट अन्तर करां दीदारा, सूरत सतिगुर सोभा पाईआ। फिर इक्क गुरमुख खड़ा हो के अग्गे बोले जैकारा, ओनां चिर दूजा मुखों आवाज़ ना कोई सुणाईआ। फिर वेखयो किस बिध साचे नाम दा भरे भंडारा, ऊणा रहण कोई ना पाईआ। सभ दा इक्को होवे प्यारा, इक्को आवाज़ दए सुणाईआ। वक्खरी वक्खरी बोली ना होवे जिवें लड़दीआं होण गटारा, आपणा राग सुणाईआ। एह गलती नहीं करनी भुल्ल के दोबारा, इक्को वार दित्ता जणाईआ। जिस घर विच्च होवे एह विहारा, उह ओस वेले चरन कँवल झुक के आपणा सीस चरनां उत्ते टिकाईआ। शंकर कहे मेरे साहिब ने मैनूं दित्ता हुलारा, मैं भज्जा आया विच्च संसारा, जन भगतो अद्धीनगी विच्च तुहानूं दिआं जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक सच दी रीती सच नाल चलाईआ। (२१ फग्गण श सं ४)

गल्लां बातां : सदी चौधवीं कहे गुरमुख सिँघ ज़ोर दी हस्स के दे वखाल, आपणी सुन दे खुल्हाईआ। गल्लीं बातीं देवणहारा शाह कंगाल, भंडारा गल्लीं बातीं भराईआ। गल्लीं बातीं आवे जगत ज्वाल, गल्लीं बातीं दीन दुनी करे तबाहीआ। गल्लीं बातीं भगतां करे संभाल, गल्लीं बातीं होए सहाईआ। गल्लीं बातीं मेला मिले भगत भगवान, बिनां गल्लां बातां तों शब्द नाद ना कोई शनवाईआ। गल्लीं बातीं कूड़ी काया माटी दिसे खाल, गल्लीं बातीं वज्जदी रहे वधाईआ। बिनां गल्लां बातां तों अज्ज तक्क खेल होया नहीं जहान, जुग चौकड़ी रीती चली आईआ। नाता तुट्टे जगत छुट्टे गल्ल फेर सुणे कोई ना कान, बिनां

गल्ल तों गुलामी सके ना कोई कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा सच हुक्म वरताईआ।
गल्लां बातां शब्द धार दी खुशी, खुशहाली विच्च प्रगटाईआ। गल्लां बातां विच्च साहिब दी रुची, बिनां गल्लां बातां तों रचना रच ना कोई जणाईआ। गल्लां बातां विच्च प्रभ दी मंज़ल मिले उच्ची, बिनां गल्लां बातां तों हत्थ किछ ना आईआ। जो जगत विच्च जहान विच्च कट्टण आए बुत्ती, बुतखाने बह के आपणा झट्ट लंघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे जगत धार दुखी, दुःख सुख आपणी खेल खिलाईआ। (४ अस्सू श सं ७)
उह गुरमुखो भगतो सन्तो जिस दीआं ग्रन्थां शास्त्रां विच्च सुणदे रहे बातां, उह बातन पर्दा रिहा खुल्हाईआ। एथे ओथे सभ दा पिता माता, बिनां शरीर तों बेनज़ीर नूर अलाहीआ। धरती तों लै के दरगाह साची तक्क भगतां दा बणया रहे राखा, अग्गे पिच्छे सज्जे खब्बे चले चाईं चाईंआ। नाले सुणदा जाए भगतो कहो तूं मेरा मैं तेरा एहो मेरी गाथा, दूजी अवर ना कोई पढ़ाईआ। सभ तों वड्डी एस दी किरपा जिस ने इक्क वार टेक लिआ माथा, उस नूं चुरासी दी फ़ासी विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। एहदे कोल कोई पहली दूजी तीजी चौथी नहीं कलासा, मेहर नज़र नाल चौथी मंज़ल दए पहुंचाईआ। एथे खेल होर जगत दा चोर उथे पुरख अबिनाशा, फेर पुच्छो एथे भगतां दा राखा, रखक हो के आपणी सेव कमाईआ । जिस ने लेखे लाई जन भगतो तुहाड्डी सुहञ्जणी सुलखणी राता, रातरी रुतड़ी आपणे रंग रंगाईआ। तुहाड्डी खुशीआं वाली खुशहाली विच्च वेखी रासा, मण्डलां मंडपां तों बाहर ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत दी धार ते जगत बेपहिछाता, पछाण विच्च बिन भगतां किसे ना आईआ। (७ फग्गण श सं ८)

भगवान किसे हत्थ ना आए गल्लां बातां, पढ़ पढ़ पन्ध ना कोई मुकाइंदा। (६ माघ २०१८ बि)
पढ़े पढ़ाए जीव जंत, जगत विद्या नाल कुड़माईआ। हरि का रूप हरि भगवन्त, हरि शब्द करे शनवाईआ। खेले खेल आदि अन्त, जुग जुग वेस वटाईआ। गुरमुख विरला जाणे सन्त, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। घर मेला घर सुहाग घर सेज नारी कन्त, घर कन्त कन्तूहल खुशी मनाईआ। गल्लां बातां करे जीव जंत, जीवण जुगती सतिगुर आपणी शब्द रूप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी खेल कर, रसना भेड़ ना कोई वखाईआ। (१६ चेत २०१६ बि)

धुर संदेशा कहे चवी चेत याद रखणा, याद याद विच्चों दवाईआ। पाल सिँघ रिहा नहीं सक्खणा, दरगाह साची मिले वडयाईआ। एह ओसे दा खेड़ा वसणा, ओसे गृह वज्जे वधाईआ। ओस दा नूर चमकणा, ओसे दी होवे रुशनाईआ। वेखिवउँ कदी भुल विच्च आ के एस नूं नहीं परखणा, पारखवां दा पारखू इक्को बेपरवाहीआ। इस ने गल्लां बातां

नाल नहीं हुण परचणा, हेरा फेरी नाल ना कोई भरमाईआ। जेहड़ा विछड़या ओस मुड़ के एस दर नहीं परतणा, लक्ख चुरासी दए सज़ाईआ। दूतां नूं दंडदिआं एहनूं कदे ना आवे तरसना, गुरमुखां नूं आपणी गोद बहाईआ। गुरमुखो वेला औणा तुसां इक्क दूजे दे प्यार नूं तरसणा, बिन मेरे प्यार हत्थ किसे ना आईआ। तुहानूं कुकर्म करदिआं अगे हो के नहीं वरजणा, हुक्म दे ना कोई समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाणे दे दृढ़ाईआ। (२४ चेत श सं १)

गुरसिख : सरन विच्च सिख जो आया। मन दा संसा गुर गवाया। जो आए प्रभ रिधे ध्याए। प्रभ चरनां संग लए मिलाए। बेमुखां तों गुरसिख बणाए। माणस देह पाई प्रथाए। थिर घर विच्च प्रभ आप बहाए। जोत विच्च जोत समाए। महाराज शेर सिँघ दया कमाए। (१७ मध्घर २००६ बि)

गुरसिख सो जो गुरू पछाणे। गुरमुख सो जो चले गुर भाणे। गुरमुख सो गुर रिदे ध्याए। पारब्रह्म दी उह साची नाए। गुरसिख सो जो ब्रह्म पछाणे। सच्चा सतिगुर सच नीसाणे। महाराज शेर सिँघ खोटे खरे पछाणे। (१८ मध्घर २००६ बि)

गुर सेवा कर गुरसिख कहावे। सेवा सिख नूं माण दवावे। सेवक जो सेवा करे। सुक्के काशट प्रभ करे हरे। बच्चिआं दा प्रभ देवे दान। सच्चा सतिगुर जाणी जाण। (१८ मध्घर २००६ बि)

जे आवे तां जीव कहावे। बिन स्वास खेह हो जावे। पूरा गुर जे दया कमावे। स्वास स्वास जीव प्रभ रिधे धिआवे। सदा ही चले गुर के भाए। साध संगत संग प्यार रखाए। देख सिख ना मथ्थे वट पाए। हो खुश जे गुरसिख नज़री आए। मैं हां आपणे सिख माहि। मोको देखो सभनी थाएं। (२० मध्घर २००६ बि)

गुरसिख प्रभ का रूप है, जे भाणे चले। (१३ चेत २००८ बि)

गुरसिख सच्चा जाणीए, जगत नाता तोड़े मोह। गुरसिख सच्चा जाणीए, गुरचरन जाए छोह। गुरसिख सच्चा जाणीए, दुरमत मैल लेवे धो। गुरसिख सच्चा जाणीए, गुर गोदी जाए सौं। गुरसिख सच्चा जाणीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे वेखा थाउँ थां।
गुरसिख सच्चा जाणीए, जो भाणा मन्ने करतार। गुरसिख सच्चा जाणीए, जो नाता तोड़े जगत संसार। गुरसिख सच्चा जाणीए, गुर चरन धूढ़ी करे शिंगार। गुरसिख सच्चा जाणीए, गुर नाउँ करे अधार। गुरसिख सच्चा जाणीए, गुर अमृत मंगे अमर भंडार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी देवणहारा ।
गुरसिख सच्चा जाणीए, जिस गुर के नाउँ रंग। गुरसिख सच्चा जाणीए, आत्म सोए सेज

पलंघ। गुरसिख सच्चा जाणीए, घर अठ्ठे पहर अनहद शब्द वज्जे मरदंग। सतिगुर सच्चा आखीए, आपणे अंदर आपणे मन्दर आपे जाए लंघ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणी वंड। (२६ पोह २०१७ बि)

गुरसिख उह ना आखीए, जो माया रहे लपटाए। गुरसिख उह ना आखीए, जो तृष्ना भुक्ख वधाए। गुरसिख उह ना आखीए, जो जन शिंगार वेसवा रूप वटाए। गुरसिख उह ना आखीए, गुर संगत विच्च उच्चा बह बह आपणा रूप प्रगटाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका तत्त रिहा समझाए।
गुरसिख उह ना आखीए, जिस आत्म अन्तर ना इक्क ध्यान । गुरसिख उह ना आखीए, जिस मन भरया माण अभिमाण। गुरसिख उह ना आखीए, जो मंगे पीण खाण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि जुगादी आपे जाणे आपणी सच पछाण। (२६ पोह २०१७ बि)

गुरमुख : गुरमुख सो जिस नाम चितारया। गुरमुख सो जिस दरस दरसा रिहा। गुरमुख सो जो प्रभ चरन निमसकारया। गुरमुख सो जिस दे जोत अधारया। गुरमुख सो जिस शब्द धुनकारया। गुरमुख सो जिस पारब्रह्म विचारया। गुरमुख सो जिस मिले बनवारया । गुरमुख सो जिस रिदे करतारया। गुरमुख सो जिस सोहँ रिदे चितारया। गुरमुख सो जिस मिले राम अवतारया। गुरमुख सो जिस तुट्ठे कृष्न मुरारया। गुरमुख सो जिस कलिजुग महाराज शेर सिँघ दर्शन पा लिआ।
गुरमुख सो जिस गुरू विचारया । गुरमुख सो जिस प्रभ चरन लगा लिआ। गुरमुख सो जिस निहकलंक कल विच्च पा लिआ। गुरमुख सो जिस दुख निवारन भगवान बीठलो पा लिआ। गुरमुख सो जिस प्रभ दर माण दवा लिआ। गुरमुख सो जिस मिल हरि संगत हरि जस गा लिआ। गुरमुख सो जिस प्रभ अबिनाश घर में पा लिआ। गुरमुख सो जिस महाराज शेर सिँघ चरनीं सीस झुका लिआ।
गुरमुख सो जिस प्रभ ज्ञान दवा लिआ। गुरमुख सो जिस निजानंद समा लिआ। गुरमुख सो जिस प्रभ दया कमा लिआ। गुरमुख सो जिस सोहँ लिव ला लिआ। गुरमुख सो जिस कलिजुग महाराज शेर सिँघ रिदे ध्या लिआ।
गुरमुख सो जिस प्रभ गरब निवारया । गुरमुख सो जिस प्रभ दरस दरसा लिआ। गुरमुख सो जिस प्रभ प्रगट जोत चमका रिहा। गुरमुख सो जिस लग गुरचरन जन्म सवारया । गुरमुख सो जिस सर्ब घट वासी आण दरसा लिआ। गुरमुख सो जिस महाराज शेर सिँघ संगत विच्च रला लिआ। (६ जेठ २००७ बि)

गुरमुख साचा जाणीए, जिस अन्तर ब्रह्म प्यार। गुरसिख सच्चा जाणीए, जिस हिरदे वसे मुरार। गुरसिख सच्चा जाणीए, हरख़ सोग तों वसे बाहर। गुरसिख सच्चा जाणीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे जणाए साची सार।
गुरमुख सो जो धी भैण कोई ना तक्के, जो तक्के तिस मिले ना कोई थाईंआ। जिस करना

प्रेम, सो सतिगुर सरनाई ढठ्ठे, दूजी प्रीती कम्म किसे ना आईआ। (२६ चेत २०२० बि)

गुरसिख विसाखी : गुरसिख विसाखी सच दरबारा, हरि सतिगुर सच्चा पाया। नाता तुटा सर्ब संसारा, माया ममता मोह चुकाया। (१ विसाख २०१८ बि)

गुरसंगत : गुरसिख मिल गुरसंगत कहीए। गुरसंगत मिल सोहँ शब्द गुण गाईए। सोहँ शब्द रसन आत्म जोत जगाईए। वज्जे धुन आत्म सुण, सुन ना सहीए। महाराज शेर सिँघ गुण, सद रसना गाईए। (०१–१३८)

संगत साची जाणीए, जिस अन्तर हरि निवास। संगत साची जाणीए, जिस आत्म सच धरवास। संगत साची जाणीए, जिस प्रभ मिलण दी आस। संगत साची जाणीए, जिस देवे दरस पुरख अबिनाश। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे खेले खेल तमाश।

संगत साची जाणीए, आत्म अन्तर रंग। संगत साची जाणीए, घर वेखे सेज पलंघ। संगत साची जाणीए, घर सुणे नाद मरदंग। संगत साची जाणीए, आपणा दवारा आपे जाए लंघ। संगत साची जाणीए, अठ्ठे पहर रहे परमानंद। संगत साची जाणीए, जिस सतिगुर सुणाए सुहागी छन्द। संगत साची जाणीए, जिस अन्त ना आए कंड। संगत साची जाणीए, जो वसे उप्पर ब्रह्मण्ड। संगत साची जाणीए, जित आत्म होए ना रंड। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद वसे संगत संग। (१०–८२५)

गुर सेवा : गुरसिख प्रीत साची चरन गुर सेवा। (१५ चेत २००८ बि)

प्रभ का दर्शन कलिजुग उत्तम मेवा। गुरचरन जीव साची गुर सेवा। (२५ चेत २००८ बि)

गुर सेवा कर गुरसिख कहावे। सेवा सिख नूं माण दवावे। सेवक जो सेवा करे। सुक्के काशट प्रभ करे हरे। बच्चयां दा प्रभ देवे दान। सच्चा सतिगुर जाणी जाण। (१८ मध्घर २००६ बि)

गुर सेवा विच्च सदा चित लाईए। गुर सेवा विच्च प्रभ रिदे ध्याईए। गुर सेवा विच्च सोहँ शब्द गुण गाईए। गुर सेवा विच्च प्रभ दर्शन पाईए। गुर सेवा विच्च लोभ हँकार गवाईए। गुर सेवा विच्च जगत विकार तजाईए। गुर सेवा विच्च संगत धूड़ हो जाईए। गुर सेवा विच्च सीतल चन्न समाईए। गुर सेवा विच्च पारब्रह्म पाईए। गुर सेवा विच्च गुरचरनीं चित लाईए। गुर सेवा विच्च महाराज शेर सिँघ संग समाईए। (१६ वसाख २००७ बि)

सुण सेवा प्रभ कहे करतार, हरि करता दए जणाईआ। सेवा विच्च सर्ब संसार, दिवस रैण सेव कमाईआ। गुरमुखां सेवा अपर अपार, जन भगतां सेवा सोभा पाईआ। मनमुखां सेवा जगत प्यार, कूड़ा नाता जोड़ जुड़ाईआ। साची सेवा हत्थ ना आए बिन सतिगुर चरन

प्यार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा इक्क सुणाईआ। सेवा कहे मैं तैथों डरदी, उच्ची कूक सकां ना राईआ। मनमुख दवारे जावां मरदी मरदी, मेरी चले ना कोई वडयाईआ। तेरे प्रेम दा मिले कोई ना दर्दी, धुर दा संग ना कोई बणाईआ। मन वासना सभ दी लग्गी मर्ज़ी, मुजरम दिसे जगत लोकाईआ। जिस वेले जन भगत दवारे वड़दी, गीत गावां खुशीआं चाईं चाईंआ। निउँ निउँ पैर उहनां दे फड़दी, जो तेरे चरनी लगन सरनाईआ। गोली बणां दर दी, घर घर सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा दे इक्क वर, हरि एका दे वखाईआ।

सुण सेवा कहे निरँकार, हरि करता आप जणाइंदा। सेवा विच्च खेल अपार, अपरम्पर आप समझाइंदा। साची सेवा अपर अपार, धुर दा फल खवाइंदा। जगत सेवा कूड़ पसार, करता कीमत कोई ना पाइंदा। कूड़ी सेवा अंदर नेत्र रोवे पुरख नार, पुत्तर धी सर्ब कुरलाइंदा। जगत कटुंब ना कोई अधार, सज्जण सैण नज़र कोई ना आइंदा। साची सेवा गुरमुख गुरमुख करन प्यार, प्रेम प्रीती विच्चों प्रगटाइंदा। जिस सेवा दी खिले सच गुलज़ार, सो बगीचा हरि महकाइंदा। सेवा करदे करदे सेवा मंगदे गए गुरू अवतार, पीर पैगम्बर झोली सर्ब डाहिंदा। सभ दी सेवा करे आप निरँकार, सेवा करदा नज़र किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप समझाइंदा। (१४ माघ २०२० बि)

गुरदेव : महाराज शेर सिँघ अट्टल गुरदेवा (१ विसाख २००७ बि)

धन्न धन्न धन्न गुरदेव, प्रगट हो जिस दरस दिखाया। धन्न धन्न धन्न गुरदेव, कलू काल अन्त आण कराया। धन्न धन्न धन्न गुर चरन सेव, मोहण माधव जिन घर माहि पाया। धन्न धन्न धन्न गुरदेव, छड देह जोत रूप समाया। धन्न धन्न धन्न सर्ब अभेव, कलिजुग निहकलंक अखवाया। धन्न धन्न धन्न प्रभ गुरदेव, लोकमात बैकुण्ठ धाम बणाया। धन्न धन्न धन्न प्रभ गुरदेव, विछड़यां जिन चरनीं लगाया। धन्न धन्न धन्न गुरदेव, गुरसिखां गुर माण दिवाया । धन्न धन्न धन्न गुरदेव, गुरसिखां गुर सच दरसाया । धन्न धन्न धन्न गुरदेव, जोत रूप सभ खेल रचाया। धन्न धन्न धन्न गुरदेव, फूल वरखा सिर सिखां लाया। धन्न धन्न धन्न गुरदेव, गण गंधरब चरनीं सीस निवाया। धन्न धन्न धन्न गुरदेव, तेती करोड़ खड़े दर सीस झुकाया। धन्न धन्न धन्न गुरदेव, कलिजुग आ सिख वडिआया। धन्न धन्न धन्न गुरदेव, सोहँ दे ज्ञान दीपक फेर जगाया। धन्न धन्न धन्न गुरदेव, कलिजुग लए तार चरन जिस सीस झुकाया । धन्न धन्न धन्न गुरदेव, पारब्रह्म परमेश्वर हो घर ठांडे आया । धन्न धन्न धन्न गुरदेव, कोट अपराधी तार साध संगत विच्च मिलाया । धन्न धन्न धन्न गुरदेव, देवे चरन निवास जिन्हां इक्क मन ध्याया। धन्न धन्न धन्न गुरदेव, दे के ब्रह्म ज्ञान अन्ध अज्ञान गवाया। धन्न धन्न धन्न गुरदेव, अमृत दे भंडार दुखीआं दा दुःख गवाया। धन्न धन्न धन्न गुरदेव, निन्दकां सिर छार कोट जन्म घोगढ़ दा पाया। धन्न धन्न धन्न गुरदेव, चार जुग होए खुआर, विष्टा मुख रखाया । धन्न धन्न धन्न गुरदेव, मन में करे गुमान कूड़ कुटंब गिराया। धन्न धन्न धन्न गुरदेव, बेमुख ना करे पछाण जमां दे वस पवाया । धन्न धन्न धन्न गुरदेव, गवाए जन्म हार सूकर जून लिखाया ।

धन्न धन्न धन्न गुरदेव, महाराज शेर सिँघ निहकलंक अवतार भगत जनां नूं पार लंघाया। (१८ जेठ २००७ बि)

गुरमंत्र : अज्ञान अन्धेर गवाए, दीपक जोत विच्च देह जगाए, सोहँ शब्द देवे गुरमंत्रा। (२ कत्तक २००७ बि)
जुग जुग खेले खेल अपारा, लोकमात वेस वटाया । गुरमंत्र नाम शब्द जैकारा, एका नाअरा लाया। (४ भादरों २०१६ बि)

गोपी : बण के आया साचा काहन, गुरसंगत गोपीआं नाल लिआई है। (१ मध्घर २०१० बि)

आपे गोपी आपे काहना, आपे शब्द आप तराना, आपे रंग रंगीला माधव, रंग आपणे हरि समाइंदा। (२८ पोह २०११ बि)

गोबिन्द : पारब्रह्म प्रभ खेल रचाया, दसवीं जोत गोबिन्द सिँघ प्रगटाया । (२४ विसाख २००७ बि)
गुर गोबिन्द गुर गहर गम्भीरा। गुर गोबिन्द आत्म शांत करे सरीरा। गुर गोबिन्द गुरमुखां देवे शब्द धीरा। गुर गोबिन्द अमृत आत्म देवे साचा नीरा । गुर गोबिन्द हउमे कटे विच्चों पीड़ा। गुर गोबिन्द कर दरस होए सच नबेड़ा। गुर गोबिन्द सोहँ शब्द विच्च मात उठाया साचा बीड़ा। गुर गोबिन्द महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां तोड़े हड्डी रीड़ा। गुर गोबिन्द गहर गुर सागर । गुर गोबिन्द गुरमुखां कर्म कराए निर्मल उजागर। गुर गोबिन्द अमृत आत्म टिकाए झूठी गागर । गुर गोबिन्द महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका रंग रंगाए गुरमुख साचे आप कराए नाम रतनागर।
गुर गोबिन्द गुर कर्म विचारया । गुर गोबिन्द कल जामा विच्च मात दे धारया । गुर गोबिन्द गुरमुखां मेल घर सच मिला रिहा । गुर गोबिन्द बेमुखां कलिजुग अन्तम अन्त भुला रिहा। गुर गोबिन्द गुरमुख साचे सन्त सोए आप जगा रिहा। गुर गोबिन्द महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दुःख रोग सोग सर्ब मिटा रिहा।
गुर गोबिन्द साची कार। गुर गोबिन्द साची धार। गुर गोबिन्द जोत सरूपी लोक तिन्न अकार। गुर गोबिन्द वड शाहो भूपन भूपी आदि जुगादि शब्द अधार। गुर गोबिन्द बिन रंग रूपी, गुरमुख साचे विच्च रिहा पसार। गुर गोबिन्द सृष्ट सबाई करे अन्ध कूपी, गुरमुख साचे देवे तार। गुर गोबिन्द सति सति सरूपी, एका जोत हरि निरँकार। गुर गोबिन्द महाराज शेर सिघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं हरि पावे सार। गुर गोबिन्द गुणां गुणवन्त। गुर गोबिन्द दरस दर पाइण विच्च मात पूरन सन्त। गुर गोबिन्द नेत्र पेख हरस मिटाइण मेल मिलावा साचा कन्त। गुर गोबिन्द महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा करे सर्ब जीव जंत।
गुर गोबिन्द जीआं गुर दाता। गुर गोबिन्द सर्ब घट घट होए ज्ञाता। गुर गोबिन्द खट खटा रंग रंगाता। गुर गोबिन्द महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म साची जोत जगाता।

गुर गोबिन्द सहज धुन पाइन। गुर गोबिन्द गुरमुख विरले दरस पाइन। गुर गोबिन्द घर दर हरि साचे लेख लिखवाइन। गुर गोबिन्द महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे लेखे आपे लाइन।

गुर गोबिन्द लेख लिखारे। गुर गोबिन्द भेख धारे। गुर गोबिन्द वेख वेख वेख भुल्ले संसारे। गुर गोबिन्द लेख लेख गुरमुखां लेख लिखारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जामा घनकपुरी धारे। गुर गोबिन्द जगत पित मात। गुर गोबिन्द बख्शे सोहँ देवे साची दात। गुर गोबिन्द बख्शे एका चरन प्रीती साचा नात। गुर गोबिन्द गुरसिख पढ़ाए इक्क जमात। गुर गोबिन्द आत्म साची जोत जगाए, मिटाए अन्धेरी रात। गुर गोबिन्द जन दर्शन पाए, अंदर वेख मार झात। गुर गोबिन्द एका एक रह जाए, जोत सरूपी सदा इकांत। गुर गोबिन्द जो दर मंगण आए, सच शब्द देवे वड करामात। गुर गोबिन्द महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन प्रीती बख्शे साची दात। (२६ जेठ २०१० बि)

गोबिन्द पर्दा गोबिन्द ओहले, गोबिन्द गोबिन्द रिहा गाईआ। गोबिन्द चढ़दा साचे डोले, गोबिन्द गोबिन्द रिहा उठाईआ। गोबिन्द मन्दर गोबिन्द मौले, गोबिन्द गोबिन्द रुत्त सुहाईआ। गोबिन्द अंदर गोबिन्द बोले, गोबिन्द राग अनाद सुणाईआ। गोबिन्द अंदर गोबिन्द तोले, गोबिन्द तोल तराज़ू आप हो जाईआ। गोबिन्द गृह गोबिन्द टोले , गोबिन्द गोबिन्द करे शनवाईआ। गोबिन्द दवारा गोबिन्द खोल्हे , गोबिन्द गोबिन्द हट्ट चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप कमाईआ।

गोबिन्द अंदर गोबिन्द रंग, गोबिन्द गोबिन्द आप चढ़ाइंदा । गोबिन्द अंदर गोबिन्द संग, गोबिन्द गोबिन्द आप निभाइंदा। गोबिन्द अंदर गोबिन्द मरदंग, गोबिन्द गोबिन्द आप वजाइंदा। गोबिन्द अंदर गोबिन्द छन्द, गोबिन्द गोबिन्द आप सुणाइंदा। गोबिन्द अंदर गोबिन्द पलंघ, गोबिन्द गोबिन्द आप हंडाइंदा। गोबिन्द अंदर गोबिन्द अनन्द, गोबिन्द गोबिन्द अनन्द आप चखवाइंदा । गोबिन्द अंदर गोबिन्द चन्द, गोबिन्द गोबिन्द नूर दरसाइंदा । गोबिन्द अंदर गोबिन्द ब्रह्मण्ड, गोबिन्द रचना वेख वखाइंदा। गोबिन्द अंदर गोबिन्द लंघ, गोबिन्द गोबिन्द सोभा पाइंदा। गोबिन्द अंदर गोबिन्द लाए अंग, गोबिन्द गोबिन्द अंगीकार कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मेला आप मिलाइंदा।

गोबिन्द अंदर गोबिन्द सो, गोबिन्द गोबिन्द सोभा पाईआ । गोबिन्द अंदर गोबिन्द हो, गोबिन्द गोबिन्द होका दए सुणाईआ। गोबिन्द अंदर गोबिन्द लो, गोबिन्द गोबिन्द प्रकाश जणाईआ । गोबिन्द अंदर गोबिन्द ढोआ ढो, गोबिन्द गोबिन्द वस्त रिहा वरताईआ । गोबिन्द अंदर गोबिन्द मोह, गोबिन्द गोबिन्द प्रेम प्रीती रिहा जणाईआ । गोबिन्द अंदर गोबिन्द छोह, गोबिन्द गोबिन्द आपणा रंग चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा लेखे पाईआ।

गोबिन्द अंदर गोबिन्द दरवाज़ा, गोबिन्द गोबिन्द आप खुल्हाइंदा। गोबिन्द अंदर गोबिन्द निवाजा, गोबिन्द गोबिन्द लेखा आप मुकाइंदा। गोबिन्द अंदर गोबिन्द साजा, गोबिन्द गोबिन्द घाड़त घड़त वेख वखाइंदा। गोबिन्द अंदर गोबिन्द राजा,गोबिन्द गोबिन्द हुक्म मनाइंदा। गोबिन्द अंदर गोबिन्द सीस ताजा, गोबिन्द गोबिन्द आप सुहाइंदा। गोबिन्द अंदर गोबिन्द मारे वाज़ा,

गोबिन्द गोबिन्द आप जगाइंदा। गोबिन्द अंदर गोबिन्द रक्खे लाजा, गोबिन्द गोबिन्द सद रक्खक नाउँ रखाइंदा। गोबिन्द अंदर गोबिन्द वजाए अगम्मी वाजा, गोबिन्द गोबिन्द राग अलाइंदा। गोबिन्द अंदर गोबिन्द फिरे भाजा, गोबिन्द गोबिन्द पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा।

गोबिन्द अंदर गोबिन्द लुक, गोबिन्द गोबिन्द मुख छुपाईआ। गोबिन्द अंदर गोबिन्द दुःख, गोबिन्द गोबिन्द रिहा वंडाईआ। गोबिन्द अंदर गोबिन्द उठ, गोबिन्द गोबिन्द लए समझाईआ। गोबिन्द अंदर गोबिन्द तुठ, गोबिन्द गोबिन्द दए वडयाईआ। गोबिन्द अंदर गोबिन्द अमृत घुट , गोबिन्द गोबिन्द जाम प्याईआ। गोबिन्द अंदर गोबिन्द जोत , गोबिन्द गोबिन्द करे रुशनाईआ। गोबिन्द अंदर गोबिन्द ओट , गोबिन्द गोबिन्द ध्यान लगाईआ। गोबिन्द अंदर गोबिन्द कोट, गोबिन्द गोबिन्द किला बंक सुहाईआ। गोबिन्द अंदर गोबिन्द चोट, गोबिन्द गोबिन्द नगारा इक्क वजाईआ। गोबिन्द अंदर गोबिन्द इक्को बहुत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मेला मेल मिलाईआ।

गोबिन्द अंदर गोबिन्द रक्ख, गोबिन्द गोबिन्द वेख वखाइंदा। गोबिन्द अंदर गोबिन्द प्रतक्ख, गोबिन्द गोबिन्द आपणी कार कमाइंदा । गोबिन्द अंदर गोबिन्द अक्ख, गोबिन्द गोबिन्द नेत्र नैण जणाइंदा। गोबिन्द अंदर गोबिन्द हत्थ, गोबिन्द गोबिन्द दस्त बदस्त मिलाइंदा। गोबिन्द अंदर गोबिन्द हठ, गोबिन्द गोबिन्द सबर सबूरी इक्क समझाइंदा। गोबिन्द अंदर गोबिन्द हट्ट, गोबिन्द गोबिन्द आप खुल्ह्इंदा। गोबिन्द अंदर गोबिन्द तट्ट, गोबिन्द गोबिन्द किनारा सच आप वडिआइंदा। गोबिन्द अंदर गोबिन्द रथ, गोबिन्द गोबिन्द आप चलाइंदा। गोबिन्द अंदर गोबिन्द महिमा अकथ्थ, गोबिन्द गोबिन्द आप सुणाइंदा। गोबिन्द अंदर गोबिन्द हस्स, गोबिन्द गोबिन्द खुशी मनाइंदा। गोबिन्द अंदर गोबिन्द रस, गोबिन्द गोबिन्द आप चवाइंदा। गोबिन्द अंदर गोबिन्द आस, गोबिन्द गोबिन्द आसा पूर कराइंदा। गोबिन्द अंदर गोबिन्द भोग बलास, गोबिन्द अंदर गोबिन्द सेजा सोभा पाइंदा। गोबिन्द अंदर गोबिन्द प्रकाश, गोबिन्द अंदर गोबिन्द जोत जगाइंदा। गोबिन्द अंदर गोबिन्द कदे ना होवे नास, गोबिन्द गोबिन्द अबिनाशी रूप धराइंदा। गोबिन्द अंदर गोबिन्द सदा साथ, गोबिन्द गोबिन्द साथी इक्को नज़री आइंदा । गोबिन्द अंदर गोबिन्द प्रगटी ज़ात, गोबिन्द अंदर गोबिन्द रूप ना कोई जणाइंदा। गोबिन्द अंदर गोबिन्द कमलापात, गोबिन्द गोबिन्द आपणे विच्च समाइंदा। गोबिन्द गोबिन्द दिती नजात, गोबिन्द भगतां दात आप वरताइंदा। भगतन दात सच्ची करामात, नाम निधाना इक्क समझाइंदा। नाम निधाना पट्टी हक़ जमात, साची विद्या इक्क वखाइंदा। मेल मिलावा पुरख समराथ, समरथ आपणा मेल मिलाइंदा । जो जन गाए सोहँ गाथ, सो गोबिन्द रूप गोबिन्द विच्च समाइंदा। पूरब लहणा चुक्के माथ, मस्तक आपणा भेव खुल्ह्इंदा । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सहाई अनाथां नाथ, ग़रीब निमाणे गोबिन्द गोबिन्द अंदर गोबिन्द झोली पाइंदा। (१८ जेठ २०२० बिक्रमी इन्दरो देवी दे गृह)

गोबिन्द अंदर गोबिन्द गढ़, गोबिन्द गोबिन्द आप उपाईआ । गोबिन्द अंदर गोबिन्द वड़, गोबिन्द गोबिन्द वेख वखाईआ। गोबिन्द अंदर गोबिन्द चढ़, गोबिन्द गोबिन्द पर्दा लाहीआ। गोबिन्द अंदर गोबिन्द नर, गोबिन्द गोबिन्द नरायण रूप दरसाईआ। गोबिन्द अंदर गोबिन्द

पढ़, गोबिन्द गोबिन्द करे पढ़ाईआ। गोबिन्द अंदर गोबिन्द सर, गोबिन्द गोबिन्द सरोवर रिहा जणाईआ। गोबिन्द अंदर गोबिन्द धर, गोबिन्द गोबिन्द रिहा वखाईआ। गोबिन्द अंदर गोबिन्द घर, गोबिन्द गोबिन्द रिहा बणाईआ। गोबिन्द अंदर गोबिन्द वर, गोबिन्द गोबिन्द झोली पाईआ। गोबिन्द अंदर गोबिन्द डर, गोबिन्द गोबिन्द रिहा वखाईआ। गोबिन्द अंदर गोबिन्द अड़, गोबिन्दगोबिन्द भेव अभेद रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप रचाईआ।

गोबिन्द अंदर गोबिन्द रत्त, गोबिन्द गोबिन्द जोड़ जुड़ाईआ। गोबिन्द अंदर गोबिन्द तत्त, गोबिन्द गोबिन्द संग रखाईआ। गोबिन्द अंदर गोबिन्द मत , गोबिन्द गोबिन्द मेल मिलाईआ । गोबिन्द अंदर गोबिन्द सति, गोबिन्द गोबिन्द विच्च वखाईआ। गोबिन्द अंदर गोबिन्द कमलापत, गोबिन्द गोबिन्द कँवल नैण जणाईआ। गोबिन्द अंदर गोबिन्द पुरख समरथ, गोबिन्द गोबिन्द रथ चलाईआ। गोबिन्द अंदर गोबिन्द वस्त अमोलक रक्ख, गोबिन्द गोबिन्द झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सद वडयाईआ।

गोबिन्द अंदर गोबिन्द मन, गोबिन्द गोबिन्द मनसा पूर कराइंदा। गोबिन्द अंदर गोबिन्द जन, गोबिन्द गोबिन्द आपणा घर वखाइंदा। गोबिन्द अंदर गोबिन्द धन, गोबिन्द गोबिन्द आप प्रगटाइंदा। गोबिन्द अंदर गोबिन्द गुण, गोबिन्द गोबिन्द गीत अलाइंदा। गोबिन्द अंदर गोबिन्द नाम, गोबिन्द गोबिन्द नाम ध्याइंदा। गोबिन्द अंदर गोबिन्द काम, गोबिन्द गोबिन्द करता खेल रचाइंदा। गोबिन्द अंदर गोबिन्द जाम, गोबिन्द गोबिन्द आप प्याइंदा। गोबिन्द अंदर गोबिन्द भान, गोबिन्द गोबिन्द आप चमकाइंदा। गोबिन्द अंदर गोबिन्द निशान, गोबिन्द गोबिन्द आप प्रगटाइंदा। गोबिन्द अंदर गोबिन्द ज्ञान, गोबिन्द गोबिन्द आप समझाइंदा। गोबिन्द अंदर गोबिन्द ध्यान, गोबिन्द गोबिन्द वेख वखाइंदा। गोबिन्द अंदर गोबिन्द काहन, गोबिन्द गोबिन्द पर्दा लाहिंदा। गोबिन्द अंदर गोबिन्द अशनान, गोबिन्द गोबिन्द सर सरोवर इक्क जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल कराइंदा। गोबिन्द अंदर गोबिन्द मीत, गोबिन्द गोबिन्द मेल मिलाईआ। गोबिन्द अंदर गोबिन्द रीत, गोबिन्द गोबिन्द धार चलाईआ। गोबिन्द अंदर गोबिन्द मसीत, गोबिन्द गोबिन्द हुजरा हक़ सुहाईआ। गोबिन्द अंदर गोबिन्द अतीत, गोबिन्द गोबिन्द बैठा डेरा लाईआ। गोबिन्द अंदर गोबिन्द गीत, गोबिन्द गोबिन्द नाअरा नाअरा इक्क जणाईआ। गोबिन्द अंदर गोबिन्द अनडीठ, गोबिन्द गोबिन्द आपणा मुख छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आपणे हत्थ रखाईआ।
गोबिन्द अंदर गोबिन्द यार, गोबिन्द गोबिन्द यारी सच निभाईआ। गोबिन्द अंदर गोबिन्द परवरदिगार, गोबिन्द गोबिन्द निरगुण नूर इल्लाहीआ। गोबिन्द अंदर गोबिन्द सांझा यार, गोबिन्द गोबिन्द एका एक खेल कराईआ। गोबिन्द अंदर गोबिन्द उजिआर, गोबिन्द गोबिन्द नूर इल्लाहीआ। गोबिन्द अंदर गोबिन्द तलबगार, गोबिन्द गोबिन्द आसा पूर वखाईआ। गोबिन्द अंदर गोबिन्द सतार, गोबिन्द अंदर गोबिन्द तार हिलाईआ। गोबिन्द अंदर

गोबिन्द अहिबाब करे प्यार, गोबिन्द अंदर गोबिन्द राह जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा आपणे हत्थ रखाईआ।
गोबिन्द अंदर गोबिन्द महबूब , गोबिन्द गोबिन्द वेख वखाइंदा। गोबिन्द मन्दर गोबिन्द अरूज, गोबिन्द गोबिन्द सोभा पाइंदा। गोबिन्द अंदर गोबिन्द महिफ़ूज़, गोबिन्द गोबिन्द सिर आपणा हत्थ रखाइंदा। गोबिन्द अंदर गोबिन्द हकूक , गोबिन्द गोबिन्द आप जणाइंदा। गोबिन्द अंदर गोबिन्द माअशूक, गोबिन्द गोबिन्द आशक धार जणाइंदा। गोबिन्द अंदर गोबिन्द ग़रूब, गोबिन्द अंदर गोबिन्द आफ्ताब चमकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल कराइंदा।
गोबिन्द अंदर गोबिन्द राम, गोबिन्द गोबिन्द रमॅया रूप वटाईआ। गोबिन्द अंदर गोबिन्द काहन , गोबिन्द गोबिन्द बंसरी नाम सुणाईआ । गोबिन्द अंदर गोबिन्द निशान, गोबिन्द गोबिन्द रिहा झुलाईआ। गोबिन्द अंदर गोबिन्द आण , गोबिन्द गोबिन्द सीस झुकाईआ। गोबिन्द अंदर गोबिन्द राजान, गोबिन्द अंदर गोबिन्द हुक्म मनाईआ। गोबिन्द अंदर गोबिन्द शाह सुल्तान, गोबिन्द अंदर गोबिन्द सीस ताज टिकाईआ। गोबिन्द अंदर गोबिन्द वाली दो जहान, गोबिन्द गोबिन्द लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां खेल रचाईआ। गोबिन्द अंदर गोबिन्द विष्न ब्रह्मा शिव देवे दान, गोबिन्द गोबिन्द साची वस्त आप वरताईआ। गोबिन्द अंदर गोबिन्द माया चुके त्रै त्रै आण, गोबिन्द अंदर गोबिन्द त्रैगुण डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप उपाईआ।
गोबिन्द अंदर गोबिन्द सूरा, गोबिन्द गोबिन्द सूरबीर अखवाइंदा। गोबिन्द अंदर गोबिन्द नूरा, गोबिन्द गोबिन्द जोती जाता डगमगाइंदा। गोबिन्द अंदर गोबिन्द सर्ब कलां भरपूरा, गोबिन्द गोबिन्द भरपूर हर घट थाईं नज़री आइंदा। गोबिन्द अंदर गोबिन्द हाज़र हज़ूरा, गोबिन्द गोबिन्द आपणा राह जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताइंदा।
गोबिन्द अंदर गोबिन्द जोग, गोबिन्द गोबिन्द रिहा जणाईआ। गोबिन्द अंदर गोबिन्द भोग, गोबिन्द गोबिन्द वेख वखाईआ। गोबिन्द अंदर गोबिन्द संजोग, गोबिन्द अंदर गोबिन्द मेल मिलाईआ। गोबिन्द अंदर गोबिन्द चोग, गोबिन्द गोबिन्द तृसना भुक्ख मिटाईआ। गोबिन्द अंदर गोबिन्द लोक, गोबिन्द गोबिन्द परलोक वेखणहारा बेपरवाहीआ। गोबिन्द अंदर गोबिन्द सलोक, गोबिन्द गोबिन्द ढोला रिहा जणाईआ। गोबिन्द अंदर गोबिन्द ओट, गोबिन्द गोबिन्द ध्यान रखाईआ। गोबिन्द अंदर गोबिन्द जोत, गोबिन्द गोबिन्द निरगुण जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी इक्को हरि, निरगुण दाता वड वडयाईआ।
गोबिन्द अंदर गोबिन्द दातार, गोबिन्द गोबिन्द दानी नज़री आइंदा । गोबिन्द अंदर गोबिन्द भंडार, गोबिन्द गोबिन्द आप वरताइंदा। गोबिन्द अंदर गोबिन्द वरतार, गोबिन्द गोबिन्द खेल रचाइंदा। गोबिन्द अंदर गोबिन्द धार, गोबिन्द गोबिन्द लह लहराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो गोबिन्द खेल कराइंदा।
सो गोबिन्द साहिब सुल्तान, सो पुरख निरञ्जण वड्डी वडयाईआ। हरि पुरख निरञ्जण नौजवान, शाह पातशाह इक्क अखवाईआ। एकँकार वड बलवान, बल आपणा आप प्रगटाईआ।

आदि निरञ्जण नूर महान, निरगुण जोत जोत रुशनाईआ। अबिनाशी करता खेल महान, समझ सके कोई ना राईआ। श्री भगवान वड प्रधान, सच प्रधानगी आप कमाईआ। पारब्रह्म प्रभ वेखणहारा मार ध्यान, ध्यान ध्यान विच्चों प्रगटाईआ। सचखण्ड खेल महान, शाह पातशाह आप खलाईआ। भूपत भूप राज राजान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा भेव जणाईआ।

भूपत भूप सति सरूप, महिमा अकथ्थ कथी ना जाईआ। वसणहारा आपणी कूट, दिशा वंड ना कोई वंडाईआ। ना तागा ना ताणा पेटा सूत, बणत नज़र किसे ना आईआ। तत्त काया ना कोई कलबूत, रूह वंड ना कोई वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो गोबिन्द बेपरवाहीआ।

सो गोबिन्द अगम्म अथाह, आदि अन्त इक्क अखवाइंदा। जोती नूर नूर रुशना, निरगुण आपणी धार प्रगटाइंदा। महल्ल अट्टल इक्क वसा, सचखण्ड साचे सोभा पाइंदा। दर दरवाज़ा दर खुल्ला, दर दरवेश वेख वखाइंदा। बेपरवाह नूरी खुदा, हक़ मुकामे डेरा लाइंदा। आफ्ताब ना कोई रुशना, नूरो नूर नूर चमकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि गोबिन्द वेस वटाइंदा।

गोबिन्द अंदर गोबिन्द नूर, गोबिन्द गोबिन्द आप धराईआ। गोबिन्द अंदर गोबिन्द सरूर, गोबिन्द गोबिन्द आप वखाईआ। गोबिन्द अंदर गोबिन्द तूर, गोबिन्द गोबिन्द नाद शनवाईआ। गोबिन्द अंदर गोबिन्द वसे ज़रूर, गोबिन्द गोबिन्द ज़रूरत पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच गोबिन्द इक्क वडयाईआ।

सच गोबिन्द हरि सुल्तान, सति सतिवादी आप अखवाइंदा। वसणहारा सचखण्ड मकान, सच सिँघासण डेरा लाइंदा। निरगुण निरगुण हो प्रधान, धुर प्रधानगी आप कमाइंदा। देवणहारा साचा दान, आपणी वस्त आप वरताइंदा। सुत दुलारा कर परवान, विष्न ब्रह्मा शिव सेव लगाइंदा। त्रैगुण माया खोल्ह दुकान, पंचम हट्ट चलाइंदा। पंच पचीसा खेल महान, जगत जगदीसा आप कराइंदा। ज़िमीं असमानां दे निशान, दो जहानां धार बंधाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो गोबिन्द खेल कराइंदा।

सो गोबिन्द श्री भगवान, आदि जुगादि समाईआ। निरगुण सरगुण कर प्रधान, लक्ख चुरासी वंड वंडाईआ। अंडज जेरज उत्भुज सेतज खेल महान, खाणी बाणी राह वखाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म देवणहारा माण, मेहरवान सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म रक्खे आण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि गोबिन्द वड वडयाईआ।

हरि गोबिन्द सच्चा शाह, शाह पातशाह आप अखवाइंदा। जुग चौकड़ी चलाए राह, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग वंड वंडाइंदा। आत्म परमात्म दए सुहा, सोभावन्त आप सुहाइंदा। निरगुण धार निरगुण मलाह, निरगुण निरगुण वेख वखाइंदा। निरगुण जोती निरगुण जगा, निरगुण आपणे रंग रंगाइंदा। निरगुण नाउँ निरगुण वटा, निरगुण आपणा ढोला गाइंदा। निरगुण उहला निरगुण चुका, निरगुण आपणा पर्दा लाहिंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि गोबिन्द खेल कराइंदा।

हरि गोबिन्द खेल अपारा, जुग चौकड़ी आप कराईआ। निरगुण सरगुण लै अवतारा, लोकमात करे रुशनाईआ। ब्रह्मा वेखे सुत दुलारा, देवणहार सदा सरनाईआ। बराह करनहार प्यारा,

यगे पुरुष जग जीवण जुगती इक्क जणाईआ। हाव ग़रीव कर आधारा, नर नरायण भेद चुकाईआ। कपल मुन खोल्ह किवाड़ा, दता त्रै रंग रंगाईआ। रिखव देव कर पसारा, प्रिथू आपणी सेव जणाईआ । मतस खेल डूंघी धारा, कछप आपणा हुक्म मनाईआ। धनंतर करे साची कारा, मोहणी आपणा रूप वटाईआ। हँसा बोल इक्क जैकारा, माणक मोती चोग मुख भराईआ। नर सिँघ लै अवतारा, अगनी तत्त तत्त बुझाईआ। करे खेल अपर अपारा, हरि गोबिन्द बेपरवाहीआ। हरी हरि हो उजिआरा, धरू लेखा लेखे लाईआ। नर नरायण वड सिकदारा, गज आपणे कंध उठाईआ। जुग चौकड़ी खेल अपारा, सतिजुग आपणा बंधन पाईआ। त्रेते देवणहार सहारा, रामपरस परस आपणा रंग रंगाईआ। दसरथ सुत कर उजिआरा, राम राम राम रूप प्रगटाईआ। वशिष्ट गुर कर किनारा, आपणा अक्खर करे पढ़ाईआ। जिस अक्खर विच्चों प्रगट होवे सर्ब संसारा, सो निशअक्खर हरि गोबिन्द विच्च समाईआ। सो गोबिन्द होया ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल सच्चा शहनशाहीआ।

हरि गोबिन्द खेल वेद व्यास, दात आपणी धार जणाइंदा। बारां अकशर कर प्रकाश, अक्खर अक्खर जोड़ जुड़ाइंदा। कवार कन्या ना होए उदास, मेहर नज़र इक्क उठाइंदा। आप वड़िआ विच्च परभास, जंगल जूह डेरा लाइंदा। ना कोई संगी ना कोई साथ, सगला संग ना कोई रखाइंदा। ब्रह्मा बोले गाथ, नारद आपणा ताल वजाइंदा। खेले खेल पुरख अबिनाश, अबिनाशी करता आपणा भेव खुल्हाइंदा। लेखा जाण त्रिलोकी नाथ, मुकन्द मनोहर लक्खमी नरायण नैण आपणे नाल मिलाइंदा। राह तक्के शंकर उप्पर कैलाश, ब्रह्मा आपणा नैण उठाइंदा। विष्नूं वेखे भोग बलास, भसमड़ आपणी कार कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो गोबिन्द हरख सोग ना कोई चिन्द, जुग जुग आपणी कार कमाइंदा। गोबिन्द माया गोबिन्द छाया, गोबिन्द गोबिन्द विच्चों प्रगटाईआ। गोबिन्द ढोला गोबिन्द गाया, गोबिन्द गोबिन्द दए वधाईआ। गोबिन्द नहावण गोबिन्द नहाया, गोबिन्द गोबिन्द उजल रिहा कराईआ। गोबिन्द घर गोबिन्द आया, गोबिन्द वेखे गोबिन्द चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आप आपणी खेल कराईआ। सो गोबिन्द कृष्न काहन, घनय्या घनय्या धार चलाइंदा। त्रै त्रै लोकां इक्को दान, नाथ अनाथां वेख वखाइंदा। बेपरवाह श्री भगवान, भगवन आपणी धार प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि गोबिन्द कार कराइंदा।

हरि गोबिन्द परवरदिगार, जलवा नूर नूर इल्लाहीआ। निरगुण सरगुण मूसे कर उजिआर, मुफ़त आपणी सेव कमाईआ। बोध अगाध नाद धुनकार, कलमा हक़ हक़ सुणाईआ। कोहतूर खेल अपार, तुरत आपणी धार जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहनशाहीआ।

सो गोबिन्द जो मूसे मीत, ईसे इसम आप समझाइंदा। निरगुण धार निरगुण रीत, निरगुण निरगुण आप प्रगटाइंदा। करे खेल सदा अनडीठ, अनडिठड़ी कार कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खुद आपणी कार कमाइंदा।

खुदा खुद करे कार, खुदी नज़र विच्च ना आईआ। ईसे इष्ट इक्क अपार, इसम आज़म

दए समझाईआ। नज़री आए नूर उजिआर, ज़हूर इक्को इक्क रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि गोबिन्द वड वडयाईआ।
हरि गोबिन्द सांझा यार, यारी आपणी सच निभाइंदा। मुहम्मद देवणहार आधार, चौका ज़ीरो नाल मिलाइंदा। ज़ीरो चार करे ख़बरदार, सिफ़र चार भेव कोई ना पाइंदा। मंज़ल मंज़ल मंज़ल करे ख़बरदार, मंज़ल आपणे हत्थ रखाइंदा। मकसद मकसद मकसद नज़र ना आए विच्च संसार, मतलब आपणा हल्ल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप रचाइंदा।
मुहम्मद जाणे इक्को आमद, आमदीद आप जणाईआ। चौदां तबक तेरी खुशामद, खुशीआं नाल दए समझाईआ। नूरी नाउँ तेरी बरआमद, वस्त तेरी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सदा वडयाईआ।
मुहम्मद वड्डिआई ज़िमीं असमान, तबक तबकां भेव चुकाइंदा। सबक सुणाए बेज़बान, ज़बान सिफ्त सालाही जणाइंदा। तीस बत्तीसा लेख कुरान, काया कुरा पर्दा लाहिंदा। आमल इक्क दो जहान, इलम भेव कोई ना पाइंदा। कामल पीर मिहबान बीदो बी ख़ैर या अल्ला इल्लाही नूर नौजवान, नौबत आपणे नाम वजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि गोबिन्द भेव चुकाइंदा।
हरि गोबिन्द खेल निरँकार, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। नंना नानक कर त्यार, नाना रूप करे रुशनाईआ। कर्म कांड ते कीता बाहर, क्रिया जगत ना कोई जणाईआ। साची घाटी आपे चाढ़, मन्दर अंदर दए वखाईआ। महल्ल अटल उच्च मनार, दीवा बाती इक्क रुशनाईआ। साची सखीआं मंगलचार, ढोला इक्को इक्क अलाईआ। अग्गे वेख खोल्ह किवाड़, श्री भगवान सच जणाईआ। नाता तुट्टे बहत्तर नाड़, हाडी मेल ना कोई रखाईआ। सुन अगम्मों हो पार, थिर घर आपणा डेरा लाईआ। थिर घर खेल करे करतार, करता आपणा रूप वटाईआ। मेल मिलाए सिरजणहार, श्री भगवान सच्चा शहनशाहीआ। लै के जाए आपणे नाल, जिन्हां पूरन दया कमाईआ। सचखण्ड दवारे चरन कँवल दए बहाल, मुख आपणा ना किसे वखाईआ। नानक ओथे जा के करीं सवाल, तेरी आसा पूर कराईआ। ना शाह ना कंगाल, तख़त ताज इक्क हंढाईआ। जुग चौकड़ी बण दलाल, सरगुण मार्ग दए वखाईआ। नूर नूर नूर जलाल, जलवा इक्को इक्क रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सदा वडयाईआ।
नानक वेख हरि गोबिन्द, आपणा आप ना कोई जणाईआ। तूं मेरा मैं तेरी बिन्द, किरन किरन विच्चों चमकाईआ। तूं साहिब गहर गम्भीर सागर सिंध, हउँ अन्त कोई ना आईआ। तूं ठाकर स्वामी सदा बख्शंद, बेपरवाह तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, वर दाता आप अखवाईआ ।
नानक वेख नेत्र खोल्ह, बिन नैणां नैण मिलाईआ। सो पुरख तेरे वसे कोल, जिस दा रूप रंग रेख नज़र कोई ना आईआ। आदि जुगादि जिस दे नाम दा वजदा ढोल, गुर अवतार पीर सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो साहिब खेल रचाईआ।
नानक मंगे दान, चरन दुआरया। तूं देवणहार भगवान, नर निरंकारया। हउँ बालक बाल अञाण, तेरा अन्त ना पारया। सच दुआरा वेख्या आण, जिस घर साहिब डेरा ला लिआ।

निरगुण नूर महान, तेल बत्ती ना कोई रखा लिआ। राग नाद ना कोई धुनकान, रसना जिह्वा ना शब्द सुणा लिआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जो चाहें सो देवें वर, मैं तेरी ओट तका रिहा।

श्री भगवान पिआ हस्स, निरगुण निरगुण नानक रिहा जणाईआ। निरगुण मार्ग सच्चा दस्स, नानक नाम सति पढ़ाईआ। होए प्रकाश तत्त अठ, अठ्ठ तत्त मिले वडयाईआ। लेखे लग्गे सभ दी रत्त, जो मेरा नाम ध्याईआ। घर घर अंदर दे ब्रह्म मत, ब्रह्म विद्या इक्क पढ़ाईआ। अन्तर आत्म होवे प्रतक्ख, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। भगतां सन्तां खोल्ह जाए अक्ख, निज नेत्र पर्दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वडयाईआ।

नानक दोए जोड़ गिआ झुक, प्रभ सरन मिले सरनाईआ। तेरा नज़र ना आया मुख, क्यों बैठा मुख छुपाईआ। एहो लग्गा मैनूं दुख, दुःख अवर ना कोई रखाईआ। प्रभ तेरे मिलण दी लग्गी भुक्ख, आसा होर ना नाल लिआईआ। श्री भगवान निरगुण निरवैर अजूनी रहित आपणा पर्दा चुक्क, सनमुख नूर दए दरसाईआ। नानक कहे तूं ना मानुस ते ना मानुख, मानुश नज़र कोई ना आईआ। सचखण्ड दवारे बैठों लुक, आप आपणा पर्दा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे साचा वर, कवण वेला होएं सहाईआ।

पुरख अबिनाशी दस्से गीत, हरि गोबिन्द आप अलाईआ। नानक जग चला साची रीत, चार वरन ज्ञान दृढ़ाईआ। शत्तरी ब्राह्मण शूद्र वैश बंन्ह प्रीत, प्रीतीवान इक्क दरसाईआ। लहणा देणा मुक्का हस्त कीट, ऊँच नीच नज़र कोई ना आईआ। तेरी धार रखा ठीक, ठोकर आपणे नाम लगाईआ। नौ दवार ना होण पलीत, कूड़ी क्रिया बाहर कढ्ढाईआ। पंज तत्त लेखा लाउणा सीस, निउँ निउँ तेरा रंग रंगाईआ। दसवें खेल करे जगदीस, जामा जोती नूर धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर , हरि गोबिन्द नानक रिहा समझाईआ।

श्री गुर नानक अग्गों पिआ हस्स, प्रभ तेरी वड्डी वडयाईआ। नौं जामे मेरी धार दिती दस्स, अग्गे आपणी सरन रखाईआ। आदि जुगादी सदा सदा सद तेरा हक़, मालक तूही नज़री आईआ। निरगुण हो के रिहों वस, सरगुण डेरा लाईआ। तेरा नाम आदि जुगादि रहे रट, जुग चौकड़ी सिफ्त सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, गोबिन्द आपणा पर्दा लाहीआ।

हरि गोबिन्द कहे मैं दस्सां एक, एका एक वड्डी वडयाईआ। नौं धार नानक टेक, दसवें आपणी गंढ पुआईआ। पूरब जन्म जन्म वेख, दुष्ट दमन दिआं वडयाईआ। हेम कुण्ट माणा सेज, सीतल धार रूप वटाईआ। हुक्मे अंदर देवां भेज, धुर फ़रमान समझाईआ। जोती नूर बख्श तेज, घर जोत जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गंढ आपणे नाल पुआईआ।

दसवें गंढ पाए करतार, करता खेल कराईआ। देवणहारा सदा अधार, उदर अंदर वेख वखाईआ। जन्म जन्म पावे सार, पारखू बणे बेपरवाहीआ। देवणहार सच प्यार, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। निरगुण सरगुण बणाए सुत दुलार, पूत सपूता वेख वखाईआ। एका जनणी कर

उजिआर, गुजरी गोद गोद वडयाईआ । तेग़ बहादर चिटी धार, सादर आपणा भेव खुल्हाईआ। करता कादर करे वीचार, सोच समझ ना कोई रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरि गोबिन्द गोबिन्द विच्च समाईआ।

हरि गोबिन्द उपजे गोबिन्द नंद, गोबिन्द मात पित अखवाइंदा। हरि गोबिन्द धारा गोबिन्द चन्द, हरि गोबिन्द किरन किरन चमकाइंदा। हरि गोबिन्द ढोला गोबिन्द छन्द, हरि गोबिन्द राग अलाइंदा। हरि गोबिन्द खेड़ा गोबिन्द पिण्ड, हरि गोबिन्द डेरा लाइंदा। हरि गोबिन्द सागर गोबिन्द सिंध, गोबिन्द गहर गम्भीर अखवाइंदा। हरि गोबिन्द बणा गोबिन्द बिन्द, हरि गोबिन्द पूत सपूता गोद बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, गुर अवतार पीर पैगम्बर आपणी कार कमाइंदा ।

हरि गोबिन्द मेहरवान, हरि गोबिन्द कुरबान, हरि गोबिन्द दान, हरि गोबिन्द निशान, गोबिन्द रूप इक्क दरसाईआ। हरि गोबिन्द बलवान, हरि गोबिन्द भगवान, हरि गोबिन्द जवान, गोबिन्द आपणा बल प्रगटाईआ। हरि गोबिन्द मैदान, हरि गोबिन्द कल्याण, हरि गोबिन्द वेखे मार ध्यान, गोबिन्द आपणी सेव कमाईआ। गोबिन्द दे के जाए ब्यान , गोबिन्द लेख लिखे महान , गोबिन्द गोबिन्द भेव चुकाईआ। गोबिन्द मंगे गोबिन्द दान, गोबिन्द देवणहारा सुल्तान, गोबिन्द आसा पूर कराईआ। गुर गोबिन्द कहे कल कलकी प्रगट होवे नौजवान, लेखा जाणे दो जहान, ज़िमीं असमान नज़र किसे ना आईआ। सम्बल वसे इक्क मकान, देवणहारा आपे दान, दयावान फेरा पाईआ। सो गोबिन्द होए भगवान, जिस दा झुलदा रहे निशान, सजदा करन दो जहान, ब्रह्मण्ड खण्ड बैठण सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक्क दृढ़ाईआ।

गोबिन्द कहे सुणो सच सिख्या, सोच समझ विच्च किसे ना आईआ। आदि पुरख जो लेख लिखया, जुगादि कोई मेट सके ना राईआ। जुग चौकड़ी सदा मिथ्या, थिर कोई रहण ना पाईआ। साहिब सतिगुर आपणा भाणा आप नजिठिआ, निरगुण निरगुण फेरा पाईआ। कलिजुग अन्तम भगत भगवान तारे इकठ्ठयां, जुग विछड़े मेल मिलाईआ। लेखे लाए दर ते ढठ्ठयां, डिग्गयां आपणे नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, गोबिन्द दाता बेपरवाहीआ।

गोबिन्द मर्द मर्द मरदाना, मरदानगी गोबिन्द रिहा कराईआ। गोबिन्द वेखणहार ज़माना, गोबिन्द निरगुण सरगुण वेस धराईआ। गोबिन्द गोपी गोबिन्द काहना, गोबिन्द बंसरी नाम वजाईआ। गोबिन्द रमईआ गोबिन्द रामा, गोबिन्द सुरती सीता आप परनाईआ। गोबिन्द धनुष गोबिन्द कमाना, गोबिन्द जनक देवणहार वडयाईआ। गोबिन्द तीर गोबिन्द निशाना, गोबिन्द दुष्टां रिहा घाईआ। गोबिन्द सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग खेले खेल महाना, ख़ालक ख़लक रूप वटाईआ । गोबिन्द ईसा मूसा मुहम्मद चार यारी बंन्हे गाना, गोबिन्द अल्ला राणी एका मन्दर दए बुझाईआ। गोबिन्द मसला वेखे हक़ कुराना, गोबिन्द मुस्सला हेठ रिहा विछाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो गोबिन्द आया जिस आदि जुगादी खेल रचाया, रचनहारा फेरा पाईआ।

आउ वेखो गोबिन्द मीत, हरि मित्र प्यारा नज़री आईआ। जिस दा इक्को ढोला इक्को

गीत, गुर ज्ञान शब्द दृढ़ाईआ। जिस दे अंदर मन्दर मसीत, कोटन काअबे बैठे सीस झुकाईआ। जिस दे गृह वसण ठाकर दवारे अनीत, नित नित ध्यान लगाईआ। जिस घर गुरदवारे कहण प्रभू एह ठीक, ब्रह्म दाता पारब्रह्म बेपरवाहीआ। उह वेखो लाशरीक, शहनशाह आपणा वेस वटाईआ। परवरदिगार सांझे यार नाल करके वेखो सच प्रीत, कूड़ा नाता दए तुड़ाईआ। राम झकोले करके वेखो प्रीत, झरोखा आपणा दए वखाईआ। पर्दा पर्दा पर्दा खोले हो नज़दीक, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। लेखा जाणे हस्त कीट, नीच नीचां लए उठाईआ। करवट बदले जो सुत्ता दे कर पीठ, मुख आपणा दए वखाईआ। कलिजुग अन्तम साधो सन्तो जीवो जंतो पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आत्म परमात्म सोहँ ढोला गाओ गीत, गीत गोबिन्द रिहा जणाईआ। गाओ गीत हरि गोबिन्द, सो साहिब आप जणाईआ। माणस जन्म ना रहे चिन्द, चिन्ता चिखा रिहा बुझाईआ। लेखा चुक्के जीउ पिण्ड, इंड ब्रह्मण्ड भेव दए खुलाईआ। अमृत धार बख्शे सागर सिंध, निझर झिरना सति झिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवणहार वडयाईआ।

गोबिन्द नाम जपो जप, जपत जपत सुख पाया। त्रैगुण माया मिटे तप, तपश होर रहे ना राया। पूरब जन्म दे मिटण पप, माणस जन्म लेखे रिहा लगाया। जो दुखड़ा सो सतिगुर अग्गे दिउ दस्स, दुखीआं दुःख रिहा गवाया। रातीं सुत्तयां दरस दिखाए हस्स हस्स, घर घर फेरा पाया। दूर दुराडा पन्ध मुकाए नस्स नस्स, निरगुण आपणी सेवा लाया। जन भगतां ढोला गाए जस, जस आपणे नाल मिलाया। निरगुण हो के सरगुण अंदर रिहा वस, वसेरा गुरमुखां अंदर आप रखाया। प्रीती अंदर गिआ फस, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि गोबिन्द आपणा भेव जणाया।

जिस गोबिन्द नूं लभ्भे जग, सो गोबिन्द रिहा जणाईआ। गुरमुखो वेखो उप्पर शाह रग, बैठा आपणा डेरा लाईआ। जगत दवारा पार कर के आओ हद्द, सतिगुर नौं दवारे हद्द पार आप कराईआ। ईड़ा पिंगल सुखमन टेडी बंक बाहर लवे कढ्ढ, उंगली आपणी नाम लगाईआ। अंदर वड़ के सुणाए छन्द, साचा राग इक्क अलाईआ। ताल वज्जे इक्क अनहद, अनहत भेव रहे ना राईआ। डूंघी भवरी बाहर कढ्ढ, सच सरोवर लए नुहाईआ। हँस रूप होवे कग, कागों हँस बणाईआ। कर प्यार सुरत सवाणी लए सद्द, शब्द हाणी मेल मिलाईआ। बिन मक्के काअबिउँ करावे सच्चा हज्ज, पीर इक्को नज़री आईआ। जिस दे हुजरे बहणा सज, सो साहिब रिहा समझाईआ। गुरमुखो गुरसिखो जन भगतो भगवान किसे लौण ना देवे अज पज, जो आपणे सो आपणे नाल मिलाईआ। जे पल्लू छड्ड के जाओ भज्ज, रातीं सुत्तयां लए जगाईआ। तुहाढ्ढी सेजा उत्ते बहे सज, सच आत्म परमात्म आपणी गोद बहाईआ। तुहाढ्ढा नेत्र वेख तुहानूं आवे लज, सतिगुर पिच्छे पिच्छे फिरे जंगल जूह उजाड़ पहाड़ फेरा पाईआ। अन्त कल पर्दा रिहा कॅज, कज़ा नेड़ कोई ना आईआ। सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ढोला गाओ गज, ग़ज़ल नज़म नग़मा अमाम आपणा नाम सुणाईआ।
(१८ जेठ २०२० बिक्रमी ज्ञान चन्द दे गृह)

गोबिन्द अगम्म गोबिन्द अथाह, गोबिन्द गोबिन्द भेव छुपाइंदा। गोबिन्द बेड़ा गोबिन्द मलाह, गोबिन्द पत्तण नज़री आइंदा। गोबिन्द हकीर गोबिन्द शाह, गोबिन्द शहनशाह रूप वटाइंदा।

गोबिन्द शरअ गोबिन्द ज़ंजीर, गोबिन्द फासी फाह लगाइंदा। गोबिन्द मंज़ल गोबिन्द अख़ीर, गोबिन्द तकदीर आप बणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पुरख अकाल गोबिन्द वेस वटाइंदा।

गोबिन्द अकाल गोबिन्द दयाल , गोबिन्द लाल रूप अखवाईआ। गोबिन्द मन्दर गोबिन्द धर्मसाल , गोबिन्द पूजा पाठ जणाईआ। गोबिन्द नूर गोबिन्द जोत बेमिसाल , गोबिन्द शब्द नाद शनवाईआ । गोबिन्द वचोला गोबिन्द दलाल, गोबिन्द वणज हट्ट चलाईआ। गोबिन्द मेला गोबिन्द चेला गोबिन्द खेले खेल विच्च जहान, गोबिन्द दो जहानां वाली आप अखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क गोबिन्द बेपरवाहीआ।

गोबिन्द पिता गोबिन्द माता, गोबिन्द पूत अखवाइंदा । गोबिन्द सज्जण गोबिन्द नाता, गोबिन्द साक सैण नाउँ धराइंदा। गोबिन्द अमृत गोबिन्द बाटा, गोबिन्द रसीआ रस चखाइंदा। गोबिन्द तीर्थ गोबिन्द ताटा, गोबिन्द सरोवर इक्क नुहाइंदा। गोबिन्द जोती गोबिन्द जाता, गोबिन्द जागरत जोत जगाइंदा। गोबिन्द वही गोबिन्द खाता , गोबिन्द लहणा देणा वेख वखाइंदा। गोबिन्द वाधा गोबिन्द घाटा , गोबिन्द इक्को रंग जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि गोबिन्द कार कमाइंदा।

गोबिन्द पुरख गोबिन्द नार, गोबिन्द सेज सुहाईआ। गोबिन्द अंदर गोबिन्द बाहर, गोबिन्द निरगुण सरगुण धार चलाईआ। गोबिन्द वछोड़ा गोबिन्द प्यार, गोबिन्द जोड़ा जोड़ वखाईआ। गोबिन्द घोड़ा गोबिन्द असवार, गोबिन्द शस्त्र बसतर तन सजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि गोबिन्द इक्क वडयाईआ।

गोबिन्द बसतर गोबिन्द शस्त्र, गोबिन्द अस्त्र इक्क उपाइंदा। गोबिन्द नाम गोबिन्द मंत्र, गोबिन्द इष्ट देव मनाइंदा। गोबिन्द जीव गोबिन्द जंतर, गोबिन्द बंधन इक्क रखाइंदा। गोबिन्द गगन गोबिन्द गगनंतर, गोबिन्द ज़िमीं असमान सोभा पाइंदा । गोबिन्द जुग गोबिन्द जुगन्तर, गोबिन्द जुग जुग वेस वटाइंदा। गोबिन्द ज्ञान गोबिन्द पंडत, गोबिन्द सिख्या सच दृढ़ांइंदा। गोबिन्द जेरज गोबिन्द अंडज, गोबिन्द उत्भुज सेतज रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि गोबिन्द धार जणाइंदा।

गोबिन्द निरँकार गोबिन्द आकार, गोबिन्द पंज तत्त कुड़माईआ। गोबिन्द जगत गोबिन्द भगत, गोबिन्द शक्त रूप दरसाईआ। गोबिन्द बूंद गोबिन्द रकत, गोबिन्द मेला सहज सुभाईआ । गोबिन्द अर्श गोबिन्द फर्श, गोबिन्द ख़ाकी तन हंडाईआ । गोबिन्द सोग गोबिन्द हरख, गोबिन्द चिन्ता रिहा गवाईआ। गोबिन्द अमृत गोबिन्द मेघ देवे बरख, गोबिन्द घनघोर घटा रूप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द जावे गोबिन्द आवे परत, गोबिन्द परतीनिध इक्क अखवाईआ।

गोबिन्द आका गोबिन्द साका, गोबिन्द नाता जोड़ जुड़ाइंदा। गोबिन्द दिवस गोबिन्द राता, गोबिन्द घड़ी पल वंड वंडाइंदा। गोबिन्द पाणी गोबिन्द आटा, गोबिन्द सच पकवान रूप धराइंदा। गोबिन्द भरपूर गोबिन्द फ़ाका, गोबिन्द तृसना विच्च तड़फाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि गोबिन्द पर्दा लाहिंदा।

गोबिन्द अन्धा गोबिन्द बन्दा, गोबिन्द नैण ना कोई रखाईआ। गोबिन्द सूरज गोबिन्द चन्दा, गोबिन्द मण्डल मंडप डेरा लाईआ। गोबिन्द खड़ग गोबिन्द खण्डा, गोबिन्द तिखी

धार वखवाईआ। गोबिन्द सुहागी गोबिन्द रंडा, गोबिन्द नार कन्त रूप ना कोई जणाईआ। गोबिन्द कर्म गोबिन्द धन्दा, निहकर्मी गोबिन्द इक्क अखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, गोबिन्द बाढी गोबिन्द रंदा, गोबिन्द आपणी कार कमाईआ।

गोबिन्द सरकार गोबिन्द दस्तार, गोबिन्द हाकम इक्क अखवाईआ। गोबिन्द भगत गोबिन्द प्यार, गोबिन्द प्रीती इक्क निभाईआ। गोबिन्द जगत गोबिन्द संसार, गोबिन्द सगला जीव समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि गोबिन्द इक्को फेरा पाईआ।

हरि गोबिन्द इक्क, हरि गोबिन्द भिख, हरि गोबिन्द लिख, लेखा आपणा आप जणाइंदा। हरि गोबिन्द गुर, हरि गोबिन्द सुर, हरि गोबिन्द धुर, धुरदरगाही धुर दी कार कमाइंदा। हरि गोबिन्द मीत, हरि गोबिन्द अतीत, हरि गोबिन्द ठांडा सीत, सीतल धार अमृत मेघ बरसाइंदा। हरि गोबिन्द मन्दर हरि गोबिन्द मसीत, हरि गोबिन्द लक्ख चुरासी परखे नीत, नित नित आपणा वेस वटाइंदा। हरि गोबिन्द भिखारी हरि गोबिन्द भीख, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आपणे हत्थ रखाइंदा।

हरि गोबिन्द लेखा, हरि गोबिन्द भुलेखा, हरि गोबिन्द देसा, देस दसन्तर दए वडयाईआ। हरि गोबिन्द राजा हरि गोबिन्द राणा हरि गोबिन्द नेता, शाहो भूप इक्क अखवाईआ। हरि गोबिन्द हेता हरि गोबिन्द भेता, हरि गोबिन्द अचन अचेता आपणा पर्दा रिहा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि गोबिन्द हरि भगती भेव चुकाईआ।

हरि गोबिन्द भगती हरि गोबिन्द शक्ती, हरि गोबिन्द जुगती जगत जुगत जणाइंदा। हरि गोबिन्द मुकती हरि गोबिन्द सुरती, हरि गोबिन्द नाद तूरती, तुरीआ राग नैण शरमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि गोबिन्द गुरमुख रूप वटाइंदा ।

हरि गोबिन्द मुख, हरि गोबिन्द सुख, हरि गोबिन्द दुख, दुख दर्द आप जणाईआ। हरि गोबिन्द जननी हरि गोबिन्द कुख, हरि गोबिन्द गोदी गोद सुहाईआ। हरि गोबिन्द पिता हरि गोबिन्द माता हरि गोबिन्द पुत्त, पिता पूत आपणा रंग रंगाईआ। हरि गोबिन्द उहला हरि गोबिन्द लुक, हरि गोबिन्द धारों गोबिन्द उठ, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। हरि गोबिन्द प्याला हरि गोबिन्द दीन दयाला हरि गोबिन्द सच्ची धर्मसाला हरि गोबिन्द अबिनाशी अचुत, चेतन्न आपणी कार कमाईआ । हरि गोबिन्द पड़दा, हरि गोबिन्द वड़दा, हरि गोबिन्द चढ़दा, हरि गोबिन्द पढ़दा, अक्खर इक्को नाम सुणाईआ। हरि गोबिन्द घर दा, हरि गोबिन्द वरदा, हरि गोबिन्द दर दा, जन भगत दवारे दर दर फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरि गोबिन्द रूप नौजवान, ना जन्मे ना कदे मरदा, बिन जीवण आपणी कार कमाईआ।
(१६ जेठ २०२० बिक्रमी प्रेमो देवी दे गृह)

गोबिन्द नार गोबिन्द कन्त, गोबिन्द नाता इक्क रखाईआ। गोबिन्द चोली गोबिन्द रंग बसन्त, गोबिन्द रंग मजीठ चढ़ाईआ। गोबिन्द मणीआं गोबिन्द मंत, गोबिन्द मंत्र नाम

समझाईआ। गोबिन्द सेज गोबिन्द सोभावन्त, गोबिन्द सुहञ्जणी रुत्त महकाईआ। गोबिन्द महिमा गोबिन्द अगणत, गोबिन्द भेव अभेव खुल्हाईआ । गोबिन्द साध गोबिन्द संगत, गोबिन्द सगला संग वखाईआ। गोबिन्द नानक गोबिन्द अञ्जण, गोबिन्द अमर रूप वटाईआ। गोबिन्द राम गोबिन्द अरजण, गोबिन्द हरि गोबिन्द समाईआ। गोबिन्द राए गोबिन्द कृष्न, गोबिन्द तेग़ बहादर दए वडयाईआ । गोबिन्द नहावण गोबिन्द नहाए, गोबिन्द मेला गोबिन्द सहज सुभाए, गोबिन्द गोबिन्द इक्क अखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि आपणी धार वखाईआ।

गोबिन्द खाट गोबिन्द खटीआ, गोबिन्द आसण इक्क विछाईआ। गोबिन्द लेफ़ सरहाणा तकीआ, गोबिन्द ओढण रूप जणाईआ। गोबिन्द कमला गोबिन्द यमला गोबिन्द सुघड़ सुचज्जा पतीआ, गोबिन्द नूर ज़हूर रुशनाईआ। गोबिन्द साजण गोबिन्द सखीआ, गोबिन्द मंगल रूप वटाईआ। गोबिन्द नेत्र गोबिन्द अक्खीआं, गोबिन्द नैण नैण मटकाईआ । गोबिन्द गुंचा गोबिन्द पतीआ, गोबिन्द फल फुल महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क गोबिन्द बेपरवाहीआ।

गोबिन्द गुरू गोबिन्द गुरदेव, स्वामी गोबिन्द आप अखवाइंदा। गोबिन्द वारी गोबिन्द सेव, गोबिन्द करनी आप कमाइंदा । गोबिन्द मिट्ठा गोबिन्द मेव, गोबिन्द रस रूप धराइंदा। गोबिन्द निहचल गोबिन्द निहकेव , गोबिन्द निहकर्मी कार कमाइंदा । गोबिन्द अलक्ख गोबिन्द अभेव, गोबिन्द आपणा भेव खुल्हाइंदा। गोबिन्द रसना गोबिन्द जिहव, गोबिन्द गीत गोबिन्द अलाइंदा। गोबिन्द मस्तक गोबिन्द थेव, गोबिन्द कौसतक मणीआं धार बंधाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि गोबिन्द आप अखवाइंदा।

हरि गोबिन्द उतर हरि गोबिन्द संदेश, हरि गोबिन्द रिहा जणाईआ । हरि गोबिन्द पुत्तर हरि गोबिन्द नरेश, हरि गोबिन्द हुक्म मनाईआ । हरि गोबिन्द कुछड़ हरि गोबिन्द चुक्क के रिहा वेख, हरि गोबिन्द गोद सुहाईआ। हरि गोबिन्द जिगरे टुकड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हाईआ।

हरि गोबिन्द दृष्ट, हरि गोबिन्द इष्ट, हरि गोबिन्द वशिष्ट समझाइंदा। हरि गोबिन्द सृष्ट सृष्ट गोबिन्द विच्च वखाइंदा। हरि गोबिन्द टांक हरि गोबिन्द जिसत, हरि गोबिन्द अंक बणाइंदा। हरि गोबिन्द दोज़ख़ हरि गोबिन्द बहिश्त, हरि गोबिन्द स्वर्गी धार वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा राह आप वखाइंदा।

हरि गोबिन्द तबक हरि गोबिन्द सबक, हरि सिख्या आप पढ़ाईआ । हरि गोबिन्द तारू हरि गोबिन्द ग़रक, हरि गोबिन्द नज़र किसे ना आईआ। हरि गोबिन्द मेला हरि गोबिन्द फ़रक, हरि गोबिन्द वंड वंडाईआ। हरि गोबिन्द चेला हरि गोबिन्द करे तरक, हरि गोबिन्द नज़र किसे ना आईआ। हरि गोबिन्द लिखत हरि गोबिन्द पढ़त, हरि गोबिन्द कलम शाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, वड दाता बेपरवाहीआ।

हरि कलम हरि कानी, हरि गोबिन्द भेव जणाईआ। हरि नाम हरि निशानी, हरि गोबिन्द नूर रुशनाईआ। हरि दाता मेहरवानी, हरि गोबिन्द झोली रिहा भराईआ। हरि गोपी हरि काहनी, हरि मुकट बैण वडयाईआ। हरि पंडत हरि विदवानी, हरि बोध अगाध पढ़ाईआ। हरि गोबिन्द इक्क परवानी, परम पुरख प्रभ आपणा मेल मिलाईआ। जिस गोबिन्द दी शास्त्र

सिमरत वेद पुरान गीता ज्ञान अञ्जील कुरान गाए कहाणी, सो गोबिन्द आपणा भेव आपणे हत्थ रखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सो गोबिन्द जन भगतां देवे दान, आत्म परमात्म परमात्म आत्म आपणे नाल मिलाईआ। (१६ जेठ २०२० बिक्रमी खोजू राम दे गृह)

गोबिन्द सिख्या : गोबिन्द सिख्या नाम जैकार, जै जैकार जणाईआ। इष्ट देव गुर पुरख अकाल, पारब्रह्म सरनाईआ। आदि जुगादी दीन दयाल, जुग जुग वेस वटाईआ। लोकमात बणाए सच्ची धर्मसाल, सचखण्ड आपणी धार वखाईआ। कूड़ी क्रिया तोड़ जंजाल, जीवण जुगत इक्क समझाईआ। वस्त अमोलक नाम सच्चा धन माल, सति सतिवादी झोली पाईआ। भाग लगाए काया माटी खाल, पंज तत्त करे रुशनाईआ। शब्द गुर देवा बण दलाल, नाम मेवा हट्ट विकाईआ। मुर्शद हो वेखे मुरीदां हाल, दीद नूर चन्द रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर सिख्या इक्क दृढ़ाईआ।
गोबिन्द सिख्या एका नाउँ, नर निरँकारा इक्क मनाईआ। एका पिता एका माउँ, एका होए सहाईआ। एका रसना एका गाओ, एका वज्जे वधाईआ। एका मन्दर दरसन पाओ, प्रभ एका नजरी आईआ। एका मार्ग सच जणाओ, पान्धी इक्को इक्क अखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर सिख्या करे पढ़ाईआ।
गोबिन्द हुक्म धुर फ़रमान, धुरदरगाही आप जणाया। परम पुरख मानो भगवान, दूजी अवर ना को सरनाया। देवणहारा दो जहान, निरगुण सरगुण वेख वखाया। लक्ख चुरासी गोपी काहन, सुरती शब्द मिलाया। अमृत प्याए आत्म जाम, सच प्याला हत्थ उठाया। डूंघी भवरी होए निगहबान, निज नेत्र वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक्क समझाया।
गोबिन्द सिख्या सच प्रीत, परम पुरख सरनाईआ। रल मिल गावो इक्को गीत, वरन बरन ना कोई लड़ाईआ। काया अंदर सच मसीत, मन्दर इक्को इक्क वखाईआ। लेखा इक्को जिहा हस्त कीट, दूजी वंड ना कोई वंडाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म बैठा रहे अतीत, त्रैगुण आपणा पर्दा पाईआ। निरवैर पुरख रक्खो चीत, चेतन्न आपणा आप कराईआ। तत्त विकारा होए सीत, अगनी भाअ ना लागे राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाम इक्को इक्क जणाईआ। गोबिन्द सिख्या सच भरपूर, भरपूर रिहा हर थाईंआ। प्रभ का वेखो जलवा नूर, नूर नूर रुशनाईआ। जिस नूं झल्ल ना सक्कया मूसा उत्ते कोहतूर, मुख आपणा ना सके उठाईआ। आदि जुगादी सच दस्तूर, बदस्तूर हुक्म मनाईआ। सभ दी आसा करे पूर, भरवासा इक्को इक्क वखाईआ। ना नेड़े ना जाणो दूर, हर घट बैठा डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान बेपरवाहीआ।
गोबिन्द सिख्या करो परवान, गुर गुर बूझ बुझाईआ। आत्म देवो परमात्म दान, दूजी वस्त भेट ना कोई चढ़ाईआ। हरि सरनाई सच ईमान, धर्म इक्को इक्क वखाईआ। प्रभ दी महिमा अञ्जील कुरान, वेद पुरान सिफ्ती रहे जस गाईआ। हरि का मन्दर इक्क मकान, हरि मन्दर रूप वटाईआ। हरि का उच्चा सच निशान, दो जहानां रिहा झुलाईआ। हरि का रूप नौजवान, बिरध बाल ना वेस वटाईआ। हरि का मंत्र नाम प्रधान, सो पुरख निरञ्जण

हँ ब्रह्म समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द सिख्या इक्क वडयाईआ।
गोबिन्द सिख्या गहर गम्भीर, हरि गवरा आप जणाइंदा। तन माटी ठांडा होए सरीर, मन सांतक रूप वटाइंदा। आसा तृसना ना लग्गे पीड़, माया ममता ना कोई हलकाइंदा। चोटी नज़र आए अख़ीर, जिस घर हरि जी डेरा लाइंदा। नूर वखाए ज़ाहरा पीर, पारब्रह्म प्रभ भेव चुकाइंदा। नाता तोड़ शरअ ज़ंजीर, शनाख़त आपणी आप कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द सिख्या इक्क पढ़ाइंदा।
गोबिन्द सिख्या लोकमात पढ़, पुस्तक पढ़न कोई ना जाईआ। गुरमुख अंदर जाइण वड़, घर मन्दर ताकी लाहीआ। सेज सुहञ्जणी बहण चढ़, आत्म अन्तर डेरा लाईआ। तू ही तू ही लैण कर, मैं मैं ना कोई जणाईआ। घर परमेश्वर मिले वर, वर इक्को इक्क सुहाईआ। नज़री आए नरायण नर, नारी कन्त आप परनाईआ। दूख निवारन चुकाए डर, घर सुख इक्क उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जो हरि हरि नाम ध्याईआ।
गोबिन्द सिख्या ऊँचो ऊँच, ऊँच अगम्म अथाह मेल मिलाईआ। भेव चुकाए नीचो नीच, नीच नीच ना कोई चतराईआ। साची सिख्या जो जन जाए सीख, तिस साख्यात नज़री आईआ। दर मंगे इक्को भीख, दूजे दर ना मंगण जाईआ। बिन कर्मां माणस जन्म जाए जीत, निहकर्म मिले सरनाईआ। इक्को बुज्झे सच प्रीत, परम पुरख बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द सिख्या इक्क समझाईआ।
गोबिन्द सिख्या लेख अलेख, लेखा लिखत विच्च ना आईआ। गोबिन्द मिटाए कूड़ा भेख, भेखी रूप ना कोई जणाईआ। इक्क साहिब नूं करो आदेस, सीस जगदीस इक्क निवाईआ। जिस दे पिच्छे नानक मोढे धरया भूरी खेस, ख़ालस आपणी सेव कमाईआ। जिस नूं झुकदे विष्न ब्रह्म महेश, शंकर बैठा ध्यान लगाईआ। जिस साहिब दा सोहणा देस, सचखण्ड वसे बेपरवाहीआ। तिस साहिब दा मुच्छ दाड़ी ना कोई केस, सीस जगदीस ना मूंड मुंडाईआ। आदि जुगादि रहे हमेश, ना मरे ना जाईआ। भेव ना पाए कोई मुल्ला शेख़, मसाइक बैठे ध्यान लगाईआ। सो आदि जुगादी इक्को एक, एकँकारा नाउँ धराईआ। लक्ख चुरासी जीव जंत साध सन्त सर्ब दी टेक, देवणहार सर्ब सरनाईआ। सो सतिगुर लैणा चेत, जो घट घट डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका अक्खर रिहा पढ़ाईआ।
गोबिन्द सिख्या सोहँ धार, सो साहिब समझाईआ। हँ ब्रह्म करे हुदार, इक्को दाता वड वडयाईआ। लेखा जाण विच्च संसार, हरि संसारी भेव चुकाईआ। जुग चौकड़ी कर कर पार, उतर पूरब पच्छिम दक्खण चारे दिशा वेख वखाईआ। कलिजुग अन्तम ख़बरदार, बेख़बर आप सुणाईआ। भगत भगवान आप उठाल, उठ उठ आपणा मेल मिलाईआ। नाता तोड़ शाह कंगाल, चार वरनां दए सरनाईआ। सच प्रीती निभाए नाल, अद्धविचकार ना कोई तुड़ाईआ। रसना जिह्वा आत्म परमात्म सोहला ढोला जो जन घालन रहे घाल, अन्तर इक्क ध्यान लगाईआ। तिन्नां निरगुण निरवैर पुरख अकाल होए दयाल, एथे ओथे सदा सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द सिख्या करे बहाल, कल माया पर्दा उप्पर उठाईआ। (१६ जेठ २०२० बिक्रमी ज्ञान सिंघ दे गृह)

गोबिन्द सुत : गुर अवतार पीर पैगम्बर कट्ठे हो के पुच्छदे, प्रभ लेखा दे जणाईआ। की लहणे तेरे गोबिन्द सुत दे, किस बिध लेखा रिहा मुकाईआ। दर निउँ निउँ तेरे झुकदे, सीस जगदीस निवाईआ। तेरे भाणे कदे ना रुकदे, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ । असां आपणे पैंडे वेखे मुकदे, थिर रहण कोई ना पाईआ। की खेल तेरे अगम्मी पुत्त दे, पता धुर दा दे समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुलाईआ।

गोबिन्द सुत मेरा अनोखा, पुरख अकाल सर्ब जणाईआ। किसे नाल ना करे धोखा, कूड़ा वणज ना कोई वखाईआ। सच दवारे वसे अगम्मी कोठा, थिर घर बैठा डेरा लाईआ। गुरमुख वेखे जो गावे सच सलोका, सोहला राग अलाईआ। जिस दे अंदर रक्खया इक्को पोथा, पुस्तक आपणी दए समझाईआ। कर प्रकाश निर्मल जोता, नूरो नूर करे रुशनाईआ। आदि जुगादि कदे ना होए होछा, गहर गम्भीर बेपरवहीआ। खेले खेल लोक परलोका, ब्रह्मण्डां खण्डां फेरा पाईआ । लक्ख चुरासी तन लगाए चोटा, ताल तलवाड़ा इक्क वजाईआ। कलिजुग जीव कोई रहण ना देवे खोटा, बुद्ध बिबेक दए बणाईआ। सच सुणावे नाम सलोका, धुर दा राग अलाईआ। अग्गे किसे नूं रक्खणा पए रोज़ा, निमाज़ां विच्च ना सीस निवाईआ। पंडतां कोलों पढ़ना पए ना पोथा, साचा मंत्र दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे लेखे रिहा जणाईआ।

गोबिन्द सुत सोहणा चंगा, चंगी तरां जणाईआ। जिस दा दो जहान वज्जे मरदंगा, मर्द मरदाना इक्क अखवाईआ। जो माछूवाड़े सुत्ता पैरी नंगा, सूलां सत्थर सेज हंढाईआ। जिस दा किसे लुहार तरखाण ना घड़या खण्डा, पुरख अकाल आपे बणत बणाईआ। जिस दे चरन चुम्मे सुरसती गोदावरी जमना गंगा, धूढ़ी टिक्का मस्तक लाईआ। पिच्छेबण के आया पंज तत्त खाकी बन्दा, अग्गे शब्दी रूप प्रगटाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल उस दी पूरी करे मंगाँ, जो बाले नीहां हेठ दबाईआ। कलिजुग मेटे अन्ध अन्धेरा अन्धा, सतिजुग साचा चन्द करे रुशनाईआ। जन भगतां होवे संगा, धुर दा संग बणाईआ। प्रेम प्यार दा पा के फंदा, गुरमुख आपणा जोड़ जुड़ाईआ। आपणे हुक्म दा वखाए डण्डा, मन मनसा दए गवाईआ। दूई द्वैती ढाह के कंधा, शरअ शरीअत मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहणा इक्को वार झोली पाईआ।

पुरख अकाल कहे मेरा सच दुलारा, दूला धुर दा नज़री आईआ। जिस दा इक्को नाम नगारा, निरगुण सरगुण रिहा सुणाईआ। जिस दा इक्को सच दवारा, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। जिस दा इक्को उच्च मनारा, महल्ल अट्टल करे इक्क रुशनाईआ। जिस दा इक्को इक्क प्यारा, गुरमुखां प्रीती तोड़ निभाईआ। जिस दा इक्को इक्क अखाड़ा, घर साचे बह बह खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ।

गोबिन्द सूरा सुत संगी सगला, साहिब समरथ उपजाईआ। जो लेखा सभ दा जाणे अगला, पिछला लहणा दए मुकाईआ। कलिजुग कूड़ा चुक्के बदला, सतिजुग जन्म दवाईआ। लेखा रहण ना देवे कोई गंधला, निर्मल नीर निरवैर दए जणाईआ। साढ्ढे तिन्न हत्थ सम्बल सुहावे इक्को बंगला, जिस गृह बह के सोभा पाईआ। सति धर्म दा गावे चार मंगला, गीत

गोबिन्द इक्क सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दीनन दया कमाईआ।

गोबिन्द सूरा उठे इक्क, एकँकार दया कमाईआ। गुरमुख वेखे धुर दे सिख, साख्यात लए प्रगटाईआ। कर वसेरा अन्तर निज, गृह मन्दर सोभा पाईआ। सति धर्म दी दस्स के बिध, बिधना लेख मिटाईआ। प्रेम प्यार दी पा के खिच्च, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। कलिजुग सतिजुग दोहां विचोला हो के विच, अदली बदली दए कराईआ। समां सुहौणा आपे लए नजिठ्ठ, निकट वरती हो के खेल खिलाईआ। जगत नेत्र किसे ना आवे दिस, गुरमुखां निज नेत्र करे रुशनाईआ। सज्जण सुहेला बणाए हित, मित्र प्यारा हो के सेव कमाईआ। नाम भंडारा देवे अमृत मिठ्ठ, रस इक्को इक्क चखाईआ। सच दवारा वखाए धाम अनडिठ, सोहणा मन्दर आप प्रगटाईआ। जो गोबिन्द पुरख अकाल दिती इक्को चिट, चिठ्ठी धुर दी हत्थ फड़ाईआ। जिस दे उत्ते तेरा मेरा लेख दित्ता लिख, दूजी वंड ना कोई वंडाईआ। सो साहिब स्वामी खेल करे नित नवित्त, जुग चौकड़ी वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वखावणहारा सच दर, दर दरवाज़ा इक्क खुल्हाईआ।

गोबिन्द सुत गहर गम्भीर, पीर पैगम्बरां प्रभ जणाइंदा। जिस दा तत्त ना कोई सरीर, मन मत बुद्ध ना कोई वखाइंदा। जिस दा गुरू ना कोई पीर, मन्दर शिवदवाला मठ्ठ नज़र कोई ना आइंदा। जिस दी मुसव्वर खिच्चे ना कोई तस्वीर, रूप रंग रेख ना कोई वखाइंदा। जिस दी मंज़ल जाणे ना कोई अख़ीर, पार किनार ना कोई कराइंदा। जिस दी बणावे ना कोई तकदीर, तदबीर अग्गे हो ना कोई समझाइंदा। जिस दी घड़े ना कोई शमशीर, तरकश तीर कमान ना कोई उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भेव अभेदा आप खुल्हाइंदा।

गुर अवतार पीर पैगम्बर तक्को जलवा, परवरदिगार नूर खुदाईआ। मेरा सुत गोबिन्द कदे ना खावे हलवा, पकवान विच्च आशा ना कोई धराईआ। कदी नहावण जाए ना किनारे गंगा, जमना जल धार ना कोई कराईआ। मात गरभ कदे ना मरना जम्मणा, लक्ख चुरासी फेरा कोई ना पाईआ। शरअ शरीअत दीन मज़हब ना कोई बंधना, बन्दीख़ाना बन्द ना कोई कराईआ। मांगत हो के दूजे दर ना जाए मंगता, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दरसावणहारा इक्क दर, दर दरवेश आप जणाईआ।

शब्द गुर सुत साहिब, कलिजुग अन्तम लए अंगड़ाईआ। हुक्मे अंदर बणके नायक, दो जहानां लए उठाईआ। सति सच करे हदाइत, हदीसां नाल पढ़ाईआ। मेहर मुहब्बत कर इनाइत, झोली दए भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा घर इक्क प्रगटाईआ।

पीर पैगम्बर कहण प्रभू रखया उहला, सति सच ना कोई दृढ़ाईआ। बेशक तेरा नाम शब्द सद विचोला, जुग जुग जोड़ जुड़ाईआ। सम्मत वीह सौ इक्की ताईं सारयां पाया रौला, अग्गे सिख्या ना कोई समझाईआ। सदी चौधवीं ताईं सभ दस्सदे रहे मौला, पड़दा अग्गे ना कोई रखाईआ। सच दस की तेरा सभ तों वक्खरा होए ढोला, धुर दा राग प्रगटाईआ। जिंनां चिर आपणा राज़ ना खोल्हा, रहमत ना सच कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगला लेखा दए जणाईआ।

अगला लेखा दस्स जुगत, जग जीवण दाते तेरी ओट तकाईआ। आदि जुगादि तेरा नाम भंडारा मुफ़त, करते कीमत कोई ना लाईआ। सदी चौधवीं हुण क्यों होइउं सुसत, ग़फ़लत विच्च अक्ख ना कोई खुल्हाईआ। की तेरा खेल एथो तक्क दरुसत, कि दरुसती विच्च दरुस्ती होर बणाईआ। पुरख अकाल कहे मेरा बाला बच्चा चुस्त, चलाकी इतफाकी आपणी दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खोल्हणहारा सच दर, दरगाह साची दए खुल्हाईआ। (२४ भादरों २०२१ बि)

गंगा गोदावरी जमना सुरसती : नारद कहे भगतो मैं तुहाथों जावां बलिहार, बल बल आपणा आप कराईआ। भावें तुसीं अंदर बैठे रहे मैं भिज्जदा रिहा बाहर, मैनूं प्रेम नाल अवाज़ ना किसे लगाईआ। मैं पिछली रातीं करके गिआ सां ख़बरदार, अगली रातीं ज़रूर आवां चाईं चाईंआ। भावे इन्दर देवता मेरे प्यार विच्च आपणीआं बूंदां रिहा वार, खवाज़ा खुशी नाल आपणी दाहड़ी रिहा हलाईआ। मैं वी हस्स के किहा ओए यार, यारां दे यार की तेरी वड वडयाईआ। मेरे नाल संगी साथी गंगा गंगोतरी गोदावरी जमना सुरसती जिन्हां दी गिणती चार, चौथे जुग आईआं पन्ध मुकाईआ। जे उहनां दे नां मदीनां वाले, पर उह है नहीं नार, प्रभ दी धार धार धार विच्चों सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा साहिब इक्क गुसाईंआ। (१४ माघ श सं ११)

ग्रन्थ : गुर अवतार पैगम्बर कहण प्रभ तेरी मेहरवानी, मेहरवान तेरी सरनाईआ। साडी नाम कलमे दी निशानी, दीन दुनी दे ग्रन्थ देण गवाहीआ। (१८ हाढ़ श सं ८)

सतिगुर शब्द ते शब्द गुरू ग्रन्थ, साहिब गोबिन्द गिआ समझाईआ। (२५ सावण श सं ८)

गोबिन्द शब्द धार किहा मैनूं मंनयो शब्द ग्रंथ, ग्रंथ गुरदेव नज़री आईआ। ओस मंज़ल नूं केहड़ा समझे विच्चों पन्थ, पन्थक वाले आपणी विद्या विच्च करन पढ़ाईआ। जिस मंज़ल नूं लभ्भ नहीं सके कोटन कोट पांधे पंडत, सो मंज़ल गोबिन्द गिआ जणाईआ। पंजां तत्तां वाला गुरू ना मंनयो क्योंकि पुरख अकाल लए अवतार अन्त, निरगुण नूर जोत करे रुशनाईआ। जिस ने तारने सारे भगत सन्त, गुरमुख गुर गुर आपणे रंग रंगाईआ। उह आदि तों लै के अन्त तक्क गुर अवतारां पैगम्बरां दा धुर दा कन्त, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर इक्को नज़री आईआ। जिस ने लक्ख चुरासी वेखणा जीव जंत, जागरत जोत बिन वरन गोत कर रुशनाईआ। ओस दी महिंमा कोई जाण ना सके मुल्ला शेख़ मुसाइक पांधा पंडत, विद्या धार ना कोई दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेशा इक्क सुणाईआ। (२४ अस्सू श सं ५)

साचा ग्रन्थ गुरू पुरख अकाला, निशअक्खर आपणा नाउँ जणाईआ। छत्ती राग गल विच्च पाए बैठे हरि हरि माला, दिवस रैण रहे जस गाईआ। चौदां सौ तीह अंक गाए गुण हरि

गोपाला, नानक अञ्जण अमरदास रामदास गिआ जस गाईआ। अरजन दस्सया राह सुखाला, आप आपणी बूझ बुझाईआ। एका गुरू वसे सच्ची धर्मसाला, काया मन्दर डेरा लाईआ। पढ़ पढ़ तोड़ना जगत जंजाला, जागरत जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख हरि, एका गुरू अखवाईआ।

साचा गुरू किसे दर ना होए बन्द, दूसर ओट ना कोई रखाईआ। गुरू ग्रन्थ पारब्रह्म अबिनाशी करते दे गाए छन्द, गुर गुर सेवा आप कमाईआ। नानक गाया बत्ती दन्द, तेग़ बहादर अन्त मन्नी सरनाईआ। गोबिन्द पुरख अकाल दा चढ़या चन्द, माता गुजरी मिले वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका तत्त शब्द ज्ञान, गुरू ग्रन्थ जगत गुर महान, जो पढ़ पढ़ विचारे तिस मार्ग देवे लाईआ। गोबिन्द लेखा किते ना लिखया, दोहरा कलिजुग जीव बणाईआ। सतिगुर पूरा किसे दवारे लैण ना जाए सिख्या, लिखया लेख ना पढ़े विच्च लोकाईआ। गोबिन्द गुरू गुर एका वेख्या, ना मरे ना जाईआ। मुच्छ दाड़ी ना कोई केसया, ना कोई मूंड मुंडाईआ। आदि जुगादि रहे हमेशया, जिस दा गुर अवतार गए जस गाईआ । सीस झुकाइन ब्रह्मा विष्न महेशया, दर दर बैठे अलख जगाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका गुर दए वडयाईआ।

"सभ सिखन को हुक्म है, गुरू मानयो ग्रन्थ"।

गुरसिख सच्चा जाणीए, जिस आत्म जोत उजिआर। गुरसिख सच्चा जाणीए, जिस आत्म ब्रह्म विचार। गुरसिख सच्चा जाणीए, जिस घर अंदर अनहद शब्द वज्जे धुंनकार। गुरसिख सच्चा जाणीए, जिस अमृत मिले भंडार। गुरसिख सच्चा जाणीए, जिस नाता तुट्टे काम क्रोध लोभ मोह हँकार। गुरसिख सच्चा जाणीए, नाता तोड़े सर्ब संसार। सतिगुर सच्चा सो वखानीए, गुरसिखां करे प्यार। गुरसिख सच्चा जाणीए, जिस मिल्या हरि भगवान। गुरमुख साचा जाणीए, जिस मिटे माण अभिमान। गुरसिख सच्चा जाणीए, एका राग सुणे अनादी कान। सतिगुर सच्चा जाणीए, लक्ख चुरासी विच्चों लए पछाण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल नौजवान।

गुरसिख सच्चा जाणीए, गुर गोबिन्द चाढ़े रंग। गुरसिख सच्चा जाणीए, आत्म सेजा वछाए पलंघ। गुरसिख सच्चा जाणीए, घर सुणे नाद मरदंग। गुरसिख सच्चा जाणीए, आपणे मन्दर आपे जाए लंघ। गुरसिख सच्चा जाणीए, दूई द्वैती ढाहवे कंध। गरमुख सच्चा जाणीए, एका गाए सुहागी छन्द। गुरसिख सच्चा जाणीए, सदा गाए परमानंद। सतिगुर पूरा जाणीए, आदि जुगादि होए बख्शंद । पुरख अकाल इक्क वखानीए, हरिजन मेटे तेरी चिन्द। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल गुणी गहिंद।

"गुरू ग्रंथ जी मानिउँ, प्रगट गुरां दी देह" :

देह उपजे पंज तत्त, अप तेज़ वाए पृथ्मी अकाश मेल मिलाया । देह अंदर रक्खे बुद्ध मन मत, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नाल रलाया । गुरू ग्रंथ अंदर एका धीरज सन्तोख जत सति, जूठ झूठ नज़र ना आया। हरि का शब्द महिमा अकथ्थ, लिख लिख लेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा गुरू शब्द इक्क जणाया।

शब्द गुरू गुर बदले चोला, पंज तत्त काया आप हंढाईआ। मनमुख जीवां कोलों करे उहला, गुरसिखां सख्यात नज़री आईआ। साहिब सतिगुर आदि जुगादि सुणाए आपणा ढोला, ढोलक

छैणा ना कोई वजाईआ। निरगुण सरगुण बण बण तोला, नाम कन्ढे लए तुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार वरन सिख दए बणाईआ।

सो सिख जो सिख्या करे परवान, नानक निरगुण सरगुण करे पढ़ाईआ। चार वरन वेखे कर ध्यान, अंदर बैठा सच्चा माहीआ । अठ्ठे पहर रहे निगहबान, दिवस रैण सेव कमाईआ। नाता तुटे हिंदू सिख मुसलमान , आत्म ब्रह्म घट घट नज़री आईआ। तिस गोबिन्द सूरा मिले आण, गुरू ग्रंथ दए गवाहीआ। गुर का शब्द जिस लिआ पहचान, खोजन बण खण्ड ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम दए वडयाईआ।

"जां का हिरदा सुध है, खोज शब्द में ले " :

बिन सतिगुर पूरे हिरदा ना होए सुध, लक्ख चुरासी होए हलकाईआ । मन वासना दह दिशा रही कुद, मन पंछी फड़के हत्थ ना कोई वखाईआ। मन मतवाली आपणा आप बैठी लुट्ट, कलिजुग ठग्ग चोर यार गए लुटाईआ। बुध निमाणी ना सके उठ, कूड़ी क्रिया रही दबाईआ । पढ़ पढ़ थक्के आलणिउँ डिगे बोट, साचे घर ना कोई बहाईआ। जो जन सतिगुर पूरे दी रक्खे एका ओट, अठ्ठे पहर ध्यान लगाईआ। घर मन्दर वजाए शब्द नगारे चोट, अनहद नादी नाद सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्द दए समझाईआ।

शब्दे अंदर हरि हरि खोज, गुर शब्दी मेल मिलाया। बिन सतिगुर माणे साची मौज, सतिगुर रस ना किसे खाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हिरदा सन्तन दए समझाया।

हरि सन्तन हिरदा उप्पर नौं दवार, नेत्र नैण आप खुल्हाईआ। खोजत खोजत पावे सार, जिस जन आपणी दया कमाईआ। पढ़ पढ़ थक्के जीव गवार, जगत वासना ना कोई मिटाईआ। अंदर वड़ ना दर्शन पाया, घर मिल्या ना मीत मुरार, गोबिन्द बैठा मुख छुपाईआ। गुरू ग्रन्थ गुर कहे पुकार, निवण सु अक्खर साची जगत चाकरी इक्क वखाईआ । एका कन्त सर्ब भतार, लक्ख चुरासी नारी रूप वखाईआ । गुरू ग्रन्थ गुर ठांडा दरबार, चार वरनां एका नैण वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भय भउ गुर गुर एका रूप जणाईआ । (१७ जेठ २०१८ बि)

घट घट : किसे ना पाई सार, घट घट सदा प्रभ वस्सया। (५ चेत २००८ बि)
महाराज शेर सिँघ घट घटूआ, घट घट वसणेहारा तेरा अन्त ना पारावारा। (११ सावण २००८ बि)
महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप घट घट सद रक्खे वासा। (५ विसाख २००६ बि)

घनईआ : सावल सुंदर कृष्न घनईआ, जामा धार निहकलंक कल आया। पंचम जेठ प्रगट जोत, जन भगतां दरस दिखाया। (१६ सावण २००८ बि)

घनकपुर : महाराज शेर सिँघ निहकलंक, जामा घनकपुरी विच्च धारया। घनकपुर आए घनईआ शाम। (१७ सावण २००८ बि)

घविंड ताईं घनकपुरी बणा के। बैठा सतिगुर आसण ला के।
(२० मध्घर २००६ बि)

घविंड : घनकपुरी प्रभ का थाउँ। पिण्ड घविंड है साचा नाउँ। (१७ सावण २००८ बि) निहकलंक कल जामा पाया, पुरी घनक विच पिण्ड घविंडा, सूरबीर वड दाते बलवान दा। (६ जेठ २०११ बि)
मनी सिँघ ने सी लिखत कराई। घविंड पिण्ड नूं करो सफ़ाई। संगत लई सी हुक्म लिखाया। नज़रों घविंड परे हटाया। ऐसा समां सतिगुर लिआवे। जल सिरी जल नहर बणावे। सतिजुग विच्च एह होसी धाम। घविंड नूं बह संगत करू प्रनाम। (१३ मध्घर २००६ बि)

घर : पैहला घर गुर का चरन, एका एक समझाईआ। दूजा घर नाम वरन, हरि नामे बूझ बुझाईआ। तीजा घर खुले हरन फरन, नेत्र नैण नैण रुशनाईआ। चौथे घर गुरसिख वड़न, चौथे पद सोभा पाईआ। पंचम दरस निरगुण करन, सरगुण खुशी मनाईआ । छेवें घर अन्तम वड़न, आवण जावण पन्ध मुकाईआ। बिन उपदेशों तरन, जिस मिल्या सच्चा शहनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे रंग रंगाईआ। (३ कत्तक २०१८ बि)
पुरख अकाला दीन दयाला सभ दे वसे कोल, निझ घर बैठा डेरा लाईआ। (१७ हाढ़ श सं ८)
तुसां ब्यान दित्ता उह मालक घर घर दा, तन वजूदा सोभा पाईआ। ना जन्मे ना मरदा, अगनी अग्ग ना कोई तपाईआ। (१७ हाढ़ श सं ८)
घर मन्दर बंक दवारड़ा, गृह भीतर आप वसाईआ। घर सज्जण मीत मुरारड़ा, हरि बैठा बेपरवाहीआ। घर करे सच प्यारड़ा, जन साजण मेल मिलाईआ। घर चाढ़े रंग अपारड़ा, रंग मजीठी इक्क रंगाईआ। घर करे हरि शिंगारड़ा, सोलां शिंगार आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गृह मन्दर सोभा पाईआ।
गृह मन्दर हरि हरि सजया, गुरमत गुर गहर गम्भीर। घर मन्दर ताल वजया, वजावणहारा गुणी गहीर। घर गढ़ हँकारी भज्जया, घर पाया अमृत सीर। घर पर्दा आपणा कजया, घर मिटे तकदीर तकसीर। घर रक्खणहारा लज्जया, घर लेखा जाणे शाह फ़कीर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर चोटी चढ़ अखीर।
घर मन्दर सोहणा सोभावन्त, घर सच्ची महल्ल अटारीआ। घर बैठा श्री भगवन्त, अकल कल कल आपणी धारीआ। घर लेखा आदि अन्त, घर जुग जुग पैज सवारीआ। घर शब्द अनडिठड़ा मंत, घर शब्द सच्ची धुंनकारीआ। घर महिमा हरि बेअन्त, घर रूप अगम्म अपारीआ। घर मेला साचे कन्त, घर मेला शाह सरकारीआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर मन्दर बणे आप पुजारीआ।
गृह मन्दर घर घर पाठ, सच पूजा आप कराइंदा। घर मन्दर मारे सरवोर ठाठ, सर अमृत आप वखाइंदा। घर नूरो नूर नुरानी जोत लिलाट, घर देवी देवा इष्ट मनाइंदा। घर शब्द

अनाहद नाद, घर अनहत सेव कमाइंदा। घर खेल पुरख समराथ, घर ढोल मरदंग वजाइंदा। घर उपजाए साची गाथ, घर बोध अगाध सुणाइंदा। घर मेल त्रिलोकी नाथ, घर सखीआं मंगल गाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, बंक दवारा इक्क सुहाइंदा। घर मन्दर सोहे बंक, हरि साचा आप सुहाइंदा। घर बुझाए एका अंक, एका अक्खर नाम पढ़ाइंदा। घर मेटे भरमा शंक, सहिंसा रोग आप चुकाइंदा। घर भगत बणाए जिउँ जन जनक, जन जननी लेखे लाइंदा। घर मेला वासी पुरी घनक, घनी शाम वेख वखाइंदा । घर जोती शब्दी लाए तनक, घर तीमत तुरीआ वेस वटाइंदा। घर मरदंग वजाए डंक, डौरू आपणे हत्थ उठाइंदा । घर लेखा घर साचा अंक, नित नवित्त वेस धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गृह मन्दर खोज खुजाइंदा।

गृह मन्दर हरि फोलया, ऊँचा बंक दवार। साचे कंडे आपे तोलया, पुरख अबिनाशी तोलणहार। आपणी धारा आपे बोलया, सोहँ शब्द सच जैकार। गृह मन्दर कदे ना डोलया, साचे तख़त बैठ सच्ची सरकार। जन भगतां अंदर आपे मौलया, निरगुण जोत कर उजिआर। अमृत भरे साचा कवलया, उलटी नाभी दए फुहार। आपे होए कला सोलया, आपे कल कलगी लए अवतार। आपे बदले आपणा चोलया, चोले रंगे गुरमुख मीत मुरार। आप मिटाए पर्दा उहलया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखे बंक सच्चा घर बार।

घर बार हरि हरि पेखया, काया गढ़ महल्ल। आपे लिखणहारा लेखया, बैठा निहचल धाम अट्टल। आपे लेखा जाणे दस दसमेसया, आपे भरम भुलेखा पाए वल छल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, बंक दुआरा आपे बैठा मल्ल। .... (५ जेठ २०१७ बि)

जन भगतो तुहानूं किरपा नाल परम पुरख दित्ता तार, तारनहार आपणे घर वसावे चाईं चाईंआ। (१७ हाढ़ श सं ८)

घाल : जुगो जुग घाल गुरसिखां घाली। कलिजुग आण प्रभ सार समाली। (२० जेठ २००७ बि)

महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिखां घाल पाई थांए। (१७ सावण २००८ बि)

घुग्गी : घुग्गी कहे मेरा ना घर ना घौंसला, आल्हणा नज़र कोई ना आईआ। इक्को प्रभू मिलण दा हौसला, दूजी ओट ना कोई तकाईआ। जन्म मरन दा नहीं कोई तौखला, भय विच्च ना कोई डराईआ। फ़रीद किहा हुण अग्गों ज़बान रोक ला, कुछ कहण कहण ना पाईआ। इक्क वार थोड़ा सोच ला, समझ समझ विच्चों प्रगटाईआ। आपणे आप दा वज़न जोख ला, की भगती सेव कमाईआ । घुग्गी कहे मेरा तन वजूद खोखला, नामहीण ना कोई वडयाईआ। जो कुछ लभ्भे उहो खाण नूं बोच लां, चुंझीं चुग चुग आपणा झट्ट लंघाईआ। एहो आसा प्रभू जन्म मरन दा रोग लाह, क्यों चुरासी विच्च भवाईआ। सच प्रीती दस्स राह, रहबर इक्क अखवाईआ। फ़रीद किहा उह इक्को इक्क खुदा, निरगुण नूर डगमगाईआ। कलिजुग अन्तम जावे आ, आलम वेखे ख़लक खुदाईआ । तैनूं विछड़ी नूं लए मिला, मेल मिलावा आपणे नाल रखाईआ। मैं वी आवां ओसे थां, दोहां मिल के

वज्जे वधाईआ। पिछला दसे ना कोई निशां, हर घट जाणी फोल फुलाईआ। साडा दोहां दा इक्क गवाह, जिस दी गवाही ना कोई बदलाईआ। फ़रीद किहा घुग्गीए दोवें मिल के करीए दुआ, वासता इक्को अग्गे पाईआ। जेहड़ा चलाए आपणी रज़ा, राज़क रहीम अखवाईआ। उह मिले महबूब खुदा, खुद मालक धुरदरगाहीआ। दोहां ने इक्ठा सीस दित्ता झुका, प्रभ तेरी सरन सरनाईआ। साडा आपे लेखा दईं मुका, सभ कुछ तेरी झोली पाईआ। एसे कारन गिआ आ, मलाहां दा मलाह फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, सभ नूं रिहा तरा, तारनहार इक्क अखवाईआ। (५ माघ श सं ३)

चरनदास : तीन लोक प्रभ चरन की दासी। (१ माघ २००७ बि)
महाराज शेर सिंघ तारे पिंगला, लागे चरन होए दास दासा। (१५ चेत २००८ बि)
दास होए जो गुर दर आया। साचा नाउँ अमृत फल पाया । (५ जेठ २००८ बि)
साध संगत प्रभ चरन होए दासी, सोहँ नाम प्रभ देवे भंडारा। (६ जेठ २००८ बि)

दर्शन सिँघ प्रभ दरस प्यास। एका शब्द प्रभ आत्म वास। रसना जपे स्वास स्वास। साचे प्रभ सदा चरन दास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सोहे पास। (१७ सावण २००८ बि)

चरन धूड़ : गुरचरन प्रीती चरन धूड़। करे बुद्धि बिबेक जीव आत्म मूड़। आत्म रंग चढ़ाए सच मजीठी गूड़। महाराज शेर सिँघ गुरमुख विरला, कलिजुग लोड़े तेरी चरन धूड़। (१७ हाढ़ २००८ बि)
निमस्कार चरन धूड़। गुरमुख बणाए मस्तक लाए जन मूढ़। बंधन बंध कटाए जिउँ आत्म जूड़। एका रंग आप चढ़ाए सोहँ साचा गूड़ो गूड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा धार आप विचार, एका देवे चरन धूड़।
चरन धूड़ साचा नाता। आपे देवे पुरख बिधाता। गुरमुख विरला प्रभ पछाता। सोहँ देवे साची दाता। अन्तकाल होए सहाई छड्ड जाइण मात पित भैण भराता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच प्रीती साची रीती। (२१ सावण २००६ बि)
चरन धूड़ सच भबूत। चरन धूड़ आत्म सूत। चरन धूड़ दुरमत मैल सभ धोत। चरन धूड़ देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप खुल्हाए सर्ब सोत।
चरन धूड़ मस्तक लाओ। साचे लेख प्रभ दर लिखाओ। झूठा भेख जगत तजाओ। वेखा वेख ना प्रभ भुलाओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भरम भुलेखे भुल्ल ना जाओ। (२३ सावण २००६ बि)
चरन धूड़ जन मस्तक लाए। शब्द पंघूड़ा हरि झुलाए। आत्म गूड़ा रंग चढ़ाए। काया जूड़ जगत जंजाल आप कटाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन धूड़ जो जन आए नहाए।
चरन धूड़ सच्चा इशनाना। मूर्ख मुगधां बणाए चतर सुजाना। चरन धूड़ आत्म देवे ब्रह्म

ज्ञाना। चरन धूड़ मस्तक लाओ, साचा शब्द सुणो काना। चरन धूड़ नेत्र लाओ, वेखो दरस हरि भगवाना। चरन धूड़ जिह्वा लाओ, आत्म रस देवे रस साचा माना। चरन धूड़ जे नक्क लगाओ, सति सुगंधी हरि वस कराना। चरन धूड़ गुरसिख हत्थ लगाणा, अतुट्ट भंडार हरि दर पाओ। चरन धूड़ जिस जन तन लगाणा, साचा पहनाए प्रभ आपे बाना। साचा देवे थांओ, चरन धूड़ इशनाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा मज़न गुरचरन नुहाओ। (१४ जेठ २०१० बि)

चरनामित : चरन छोह वसणा चरनां पास, चरनामित इक्क प्यार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। (२ फग्गण २०१८ बि)

चरनामित गुरसिखां पाया। चरनामित फल प्रभ धुरों लिखाया। चरनामित सिच तन मन प्रभ हरा कराया। चरनामित अमृत बूंद पी अमरा पद पाया। चरनामित साध संगत गुर सागर गहर गम्भीर पाया। चरनामित रसना पी बाल बिरध सभ तराया। महाराज शेर सिँघ तेरी वड्डिआई, आत्म अमृत बरख आत्म तृप्ताया। (५ जेठ २००८ बि)

चरन चरनोदक साची धार, दुःख दर्द मिटाईआ। जगत रुले कर प्यार, अनमुले लाल बणाईआ। भंडारे खुल्ले दर दरबार, अतोट अतुट रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरन चरनामित आप हो जाईआ।

चरन मीता मीत मुरार, चरन सरन सरनाईआ। पतित पुनीता करे विच्च संसार, आप आपणा सुख उपजाईआ। चलाए रीता अपर अपार, आपणी नीती वेख वखाईआ। (२६ जेठ २०१६ बि)

पंडत कवण साचा चरनामित, मित्र श्री भगवान मिलाईआ। निरंतर ब्रह्म करे हित, माया पर्दा परे हटाईआ। दिब नेत्र आए दिस, निरगुण निरँकार निराकार जोत रुशनाईआ। बालमीक जो लगावे खिच, धुन आत्मक राग सुणाईआ। धाम वखाए अव्वलड़ा अनडिठ, जग नेत्र नज़र ना आईआ। सति विद्या किथों लई सिख, कवण करे पढ़ाईआ। कवण कहे कलम छाही काग़ज़ लेख लिख, धुर दा हुक्म फ़रमाण इक्क जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरनामित इक्को दर रखाईआ।

चरनामित कवण सति, शंकर पिण्डी कवण वडयाईआ। किस बिध उपजे ब्रह्म मत, ब्रह्म विद्या सच पढ़ाईआ। लेखा मुके तत्तव तत्त, वासताक वस्तू इक्को नजरी आईआ। मिले मेल पुरख समरथ, श्री भगवान जोड़ जुड़ाईआ। बालमीक जिस दी चरनी गिआ ढठ्ठ, सीस जगदीस झुकाईआ। सो भूमका असथान साचा गृह देणा दस्स, मन्दर कवण सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरन चरनोदक कवण रूप वटाईआ।

चरन चरनोदक किसे हत्थ ना आवे पंडत, सतिजुग त्रेता दवापर कलिजुग चार कुण्ट चारे खाणी ध्यान लगाईआ। कोटां विच्चों भगत भगवान दर बणे मंगत, आपणी इछया झोली अग्गे डाहीआ। किरपा करे साहिब सूरा सर्बंगत, सति सतिवादी दया कमाईआ। निरगुण निरँकार सरगुण अंगीकार कार अंगत, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। पंज तत्त काया चोली नाम निधान चाढ़ रंगत, अमृत रस अन्तर जाम ध्याईआ। मानुष मानुख मानव बणाए बणतर, घर सच देवे वडयाईआ। सच चरनोदक चरनामित निज घर प्याए आप निरंतर, झिरना

इक्को इक्क झिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा चरनामित इक्क वरवाईआ।

चरनामित नज़र ना आवे जगत कटोरे, गढ़वा खुशी ना कोई जणाईआ। जुग चौकड़ी जन भगतां श्री भगवान आप वरताए भोरे भोरे, थोड़ा थोड़ा मुख अन्तर जाम प्याईआ। जिन्हां पीता तिन्नां आपे बौहड़े, काया मन्दर अंदर साढ्ढे तिन्न हत्थ खुशी मनाईआ। बालमीक बटवारा वर इक्को लोड़े, नेत्र नैण अक्ख ध्यान लगाईआ। अन्त काल कल काती कोई ना बौहड़े, सगला संग ना कोई निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरनामित चरनोदक आपणे हत्थ रखाईआ।

साचा चरनामित पंडत जी देणा दस्स, कवण सच सच वरताईआ। जिस दे पीतयां मन वासना होवे वस, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना कोई हलकाईआ। काया मन्दर अंदर निरगुण जोत होवे प्रकाश, जोत निरञ्जण डगमगाईआ। जन्म कर्म दी पूरब पूरी होवे आस, तृसना कूड़ी दए चुकाईआ। जिस दवारे बालमीक होया दासी दास, बजवाड़ा आपणा सीस निवाईआ। सो जंगल जूह उजाड़ पहाड़ प्रभ वेखणहार परभास, डूंघी कंदर खोज खुजाईआ। लेखा जाणे चोटी पर्बत उत्ते कैलाश, पारब्रह्म ब्रह्म पड़दा आप चुकाईआ। विष्न हो के विश्व करे तलाश, चार कुण्ट दह दिशा दो जहानां खोज खुजाईआ। हरि का चरनामित कोई प्याए ना विच्च ग्लास, कटोरा नज़र किसे ना आईआ। कर किरपा जिन्हां आप देवे पुरख अबिनाश, अबिनाशी रूप दए बणाईआ। इक्क चरनामित पीण दी सभनां रक्खी आस, बिन भगतां लोकमात हत्थ किसे ना आईआ। साची पूंजी धुर दी रास, परम पुरख पुरखोतम पारब्रह्म पतिपरमेश्वर सद आपणे हत्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरनामित आपणा आप बणाईआ।

पंडत जी दस्सो की अमृत रस, चरनामित कवण वडयाईआ। कवण मार्ग देवे दस्स, राह साचा इक्क समझाईआ। मिले मेल पुरख समरथ, महिमा अकथ्थ दए दृढ़ाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुरान गीता ज्ञान गुर अवतार जिस दा गौंदे जस, विष्न ब्रह्मा शिव ध्यान लगाईआ। सो साहिब सुल्तान श्री भगवान दूर दुराडा नेरन नेरा घर साचे आवे नस्स, बण पान्धी पन्ध मुकाईआ। गल्लां बातां दी नहीं कोई गाथ, रसना जिह्वा ना कोई वडयाईआ। अंदर वड़ के वेखो मार झात, की अमृत रस तुहाड्डे निझर झिरना झिर झिर आपणा इष्ट पकाईआ। बन्द किवाड़ी खोल्ह के वेखो ताक, बजर कपाटी कुण्डा लाहीआ। पढ़यां उह ना आवे सवाद, अंदर वड़यां सति सरूप समाईआ। सो पंडत जो पारब्रह्म विच्च होए विस्माद, ब्रह्म विस्मादी रूप समाईआ। जिस दा खेल आदि जुगादि, नाद अनादी आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अमृत साचा इक्को इक्क मंग मंगाईआ।

पंडत जी की तुसां अमृत पीता, चुली हत्थां उत्ते टिकाईआ। तन मन होया ठांडा सीता, पंज तत्त अग्ग ना कोई जलाईआ। की आया ज्ञान बिन पढ़यां अठारां ध्याए गीता, राम कृष्ना सनमुख नज़री आईआ। की मिट्ठा होया कौड़ा रीठा, सच मिठास इक्को तत्त भराईआ। की लेखा चुक्कया नीचां ऊँचां, ज़ात अज़ात लेखा दित्ता गवाईआ। जिस अमृत रस नाम निधान सच दवारिउँ पीता, सो पत्तत्त पापी पुनीत रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग जुग चरनामित धुर दा आप वरताईआ।

पंडत जी अमृत वस्तू की, कवण देवे वरताईआ। जिस नाल निर्मल होवे जी, जीव आत्मा भेव रहण कोई ना पाईआ। लेखा चुके साढ्ढे तिन्न हत्थ सीं, रविदास चुमारा दए गवाहीआ। बटवारा बजवाड़ा बालमीक फेर ओसे दा अद्धीन, जिस मस्कीन दित्ता बणाईआ। धुर दे पंडत कोलों पढ़ो ताअलीम, विद्या इक्को दए समझाईआ। शाह पातशाह शहनशाह दो जहानां वाली वखाए आपणा निरगुण नूर सच सीन, स्वच्छ सरूपी रूप वटाईआ। जिस दा फ़रमाण हुक्म चौदां लोक त्रैभवन चले लक्ख चुरासी जीव जंत अद्धीन, गुर अवतार पीर पैगम्बर बैठे सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरनामित चुली दिसे अनमुली, जिस दी कीमत किसे ना पाईआ।

पंडत जी चरनामित किस नूं वरताया, पीवणहार कवण अखवाईआ। जे अन्तर अक्ख है वेखो खोल् नज़ारा, की कुछ साम्हणे नज़री आईआ। जिस दे पिच्छे बालमीक रुलया विच्च उजाड़ां, सो ठोकर नाम लगाईआ। जिस राम दा नाम कीता उजिआरा, लेखा लिख के शहादत दिती गवाहीआ। तिस राम दा अन्त ना पारावारा, पारब्रह्म प्रभ बेपरवाहीआ। जुग चौकड़ी वेखणहारा खेल नयारा, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। चारे वेदां दए सहारा, पुरान अठारां करे उजिआरा, गीता ज्ञान अठ्ठ दस जोड़ जुड़ाईआ। साची सखीआं वेख आखाड़ा, दो जहानां मंगलाचारा, मण्डल रास इक्क रचाईआ। वेखणहारा गंगा किनारा, बख्शणहारा चरनामित साचा ठंडी ठारा, रस इक्को इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच लेखा जाणे थाउँ थाईंआ।

पंडत जी गढ़वी करे पुकार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। जिस दा आदि जुगादी तीर्थ तट्ट सरोवर धुर दा सच भंडार, गंगा जमना सुरसती गोदावरी धार चलाईआ। सो करता पुरख करनेहारा खेल करे करतार, काहन घनय्या राम रमय्या निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। साचा जाम मीत प्यार पिलावणहार, रस इक्को इक्क वखाईआ। तिस दा नेत्र नैण अक्ख करो दरस दीदार, सनमुख हो के रिहा समझाईआ। जगत विद्या वसे बाहर, भगत विद्या इक्क समझाईआ। जिस धार विच्चों निरअक्खर साचे कर प्यार, बालमीक आपणी कलम चलाईआ। सो बालमीक कलिजुग विच्च करे पुकार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। एह मेरा उहो यार, जो जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। ओसे दा सच्चा भंडार, जिस नूं कोटन कोट पंडत पांधे रहे वरताईआ। पर अब ना कोई पीवणहार, अमृत पी अमर रूप ना कोए वटाईआ। शंकर नैण रिहा उघाड़, आपणी त्रिशूल हत्थ रखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, चरनामित इक्को घर वखाईआ।

चरनामित अंदर वसे भगवान, जल साचा रिहा सुणाईआ। इस दी करो पछाण, पंडत जी आपणा ध्यान लगाईआ। फेर देवो फ़रमाण, हुक्म संदेसा इक्क सुणाईआ। धुर दा वेख खेल महान, महांबली आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पुच्छणहारा सच दर, जिस घर बह के अमृत जल जन भगत पीवण चाईं चाईंआ। (१५ चेत २०२१ बि)

चरनप्रीती : जन भगतो प्रभू दी चरन प्रीती चौथी मंजल दी कलास, चौथे पद दा लहणा जगत दी हद हदूद दए मुकाईआ। जिथ्थे सतिगुर शब्द देवे शाबाश, सिर सिर आपणा हत्थ

टिकाईआ। गुरमुखो चौथी जमात पढ़न वालयो सभ दा अन्तम सचखण्ड विच्च होणा निवास, जगत जमातां दी लोड़ रहे ना राईआ।(२१ चेत श सं १२)

हरिजन चरन प्रीती साची सिख्या, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाईआ। दीन दुनी जगत जहान मिथ्या, थिर रहण कोई ना पाईआ। सतिगुर प्रेम रस सदा मिठया, हरिजन साचे आप चखाईआ। (२२ फग्गण श सं ८)

चरन प्रीती साची सेव, सच स्वामी आप समझाइंदा। (२१ मध्घर २०२१ बि)

चरन प्रीती प्यार प्रेम, मुहब्बत इक्क जणाईआ। तेरा मेरा साचा नेम, टुट्टी गंढ वखाईआ। तेरे नालों दुख तसीहा कटया उत्ते कुण्ट हेम, जल धारा सीस वहाईआ। जे उह नज़ारा तक लएं आपणे नैण, तैनूं एह दुख रहे ना राईआ। तूं रसना आपणी हरिसंगत आपे आवें कहण, कह कह दएं सुणाईआ। ओ गुरमुखो गुरसिखो सन्तो भगतो जिन्हां नूं पुरख अकाल मिल गिआ साक सज्जण सैण, तिन्हां नूं लैण देण दी लोड़ रही ना राईआ। उह कूड़े वहण कदे ना वहण, ममता मोह गए तजाईआ। सतिगुर सरनाई सरन सच्ची चैन, सांतक सति रूप दए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। (१३ चेत श सं १)

चरन प्रीती साची रीती जग तों वक्खरी कुरबानी, काया कतलगाह ना कोई फिराईआ। (१५ फग्गण श सं १)

गुरचरन प्रीत हिरदे प्रभ वसे, अमुलड़ा लाल विच्च देह टिकाया। हीरा हरि जीउ हरि रवे विच्च रव सस्से, देह दीपक तेज़ वखाया। आत्म नाम जो रसना रसे, खोल्ह पड़दा प्रभ भेद मिटाया। हरि जीउ गुरसिखां घर वसे, ज्ञान ध्यान सच मार्ग दिखाया। (६ चेत २००८ बि)
गुरचरन प्रीती दरस भुक्ख। (१७ हाढ़ २००८ बि)

पुरख अबिनाशी किहा मैं किसे बिध कदे ना रीझां, भगतां दिआं समझाईआ। बिना चरन प्रीती ना कदे पतीजां, बाकी लोड़ ना कोई रखाईआ। (१८ पोह २०२१ बि)

चवर : चवर कहे मैं होवां नीवां, उप्पर रहण दी आदत दिआं बदलाईआ। चरन कँवल प्रभ घोली थीवां, माण अभिमाण मिटाईआ। चरन चरनोदक साचा पीवां, छोह आपणी नाल रलाईआ। बिन धूढ़ी कदे ना जीवां जीवण इक्को नज़री आईआ। जिउँ भगवान दुआरे भगत नीवां, उच्चा रहण कोई ना पाईआ। जिस लहणा चुकाया साढ्ढे तिन्न हत्थ सीवां, सीने सभ दे ठंड रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी किरपा आप कमाईआ। चवर कहे मैनूं दिउ वधाई, प्रभ मार्ग सच जणाया। जन्म जन्म दी मिटी शाही, मेरा रोग

गवाया। साची सिख्या इक्क समझाई, नीवीं धार बंधाया। चरन कँवल देवे सरनाई, सरनगत इक्क जणाया। साचे घर ना देवे कोई गवाही, मुलज़म बरी ना कोई कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धार जणाया।

चवर कहे मेरे धन्न भाग, प्रभ सिख्या सच दृढ़ाईआ। भगत दुआरे चरनी गिआ लाग, पिछला माण मिटाईआ। कर किरपा धोवे मेरा दाग, दुरमत रहण कोई ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा आप जणाईआ।

चवर कहे मैं चरनां सेव कमावांगा। धूढ़ी टिक्का ला के खुशी मनावांगा। वडउँ हो के निक्का, निक्का वड्डे विच्च समावांगा। जुग चौकड़ी रस वेख्या फिका, अन्त अमृत इक्को मुख रखावांगा। माण वड्डिआई विच्च पिच्छे विका, अग्गे चरन ध्यान टिकावांगा। निरगुण वेख्या खेल अनडिठा, दर बह के सेव कमावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दित्ता सच्चा वर, आपणी झोली पावांगा।

चवर कहे मैनूं दिउ दिलासा, जन भगतां रिहा जणाईआ। हरि सरनाई सच भरवासा, भरम रहण ना पाईआ। सगल वसूरा मेरा लाथा, दुःखड़ा दर्द मिटाईआ। मिल्या दीन दयाला रघुनाथा, रहबर इक्को सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी रीती आप जणाईआ।

चवर कहे मोहे करो प्यार, प्रेम प्यारा आप जणाईआ। मैं चरन डिगा मूंह दे भार, बल आपणा ना कोई वखाइंदा। नौं सौ चुरानवें चौकड़ी जुग पिच्छों मैनूं करनी मिली निमस्कार, एसे वास्ते सभ दे अग्गे वासता पाइंदा। मैं सेवा करां नर निरँकार, नीवां हो के आप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव जणाइंदा। चवर कहे मैं निक्का बाला, प्रभ जन्म दित्ता बदलाईआ। मार्ग दस्सया इक्क सुखाला, सच सच समझाईआ। सचखण्ड दी सच्ची चाला, अवल्लड़ी कार जणाईआ। वसणहारा सच सच्ची धरमसाला, धुर दरबारी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। .... (१६ चेत २०२० बि)

चार खाणीआं, बाणीआं : नौं खण्ड सत्त दीप लक्ख चुरासी जिस दी शाख़, अंडज जेरज उत्भुज सेतज चारे खाणी आप समझौंदा ए। चारे बाणी जिस दी आवाज़, परा पसन्ती मद्धम बैखरी ढोला राग अलौंदा ए। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस दा सच समाज, समगरी साची नाम हत्थ फड़ौंदा ए। (२० हाढ़ २०२१ बि)

चार यार : सदी चौधवीं कहे जिस वेले मुहम्मद चार यारां नूं पाई कसम, किसम खुदा दी इक्क समझाईआ। ओस वेले पुठ्ठी पगढ़ी दी कीती सी रसम, वणजारा गुलज़ार सिँघ जिस तों ख़रीद के चौहां दे सिर ते दित्ती बंधाईआ। नाल तागा रक्खया सी पशम, एसे कर के पच्छिम नूं काअबे सारे सीस झुकाईआ। हुक्म दित्ता संदेशा दित्ता ओस खुदा दा मन्नो इसम, जो आज़म नूर अलाहीआ। तत्तां वाला नहीं जिस्म, वजूद वंड ना कोई वंडाईआ। जलवा तक्को इक्को चशम, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच फरमाणा इक्क समझाईआ।

सदी चौधवीं कहे जिस वेले चार यारां पगड़ी बध्धी पुठ्ठी, पिच्छेगंढ पवाईआ। चारे बहा के मुहम्मद आपणी चारे गुठीं, कोना गोशा वेख वखाईआ। चौहां दे मैहन्दी ला के पंजां पोटीं, लाल रंग दित्ता चढ़ाईआ। कसम खाओ दीन विच्च लिऔणा जो रक्खे बोदी धोती, धुर दा हुक्म सुणाईआ। इस्लाम नूं बणौणा आपणा गोती, दूजा प्रेम ना कोई रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारा दए दृढ़ाईआ। (५ मध्घर श सं ४) (मुहम्मद साहिब तों बाद इस्लाम दे चार मुखीए : अबूबकर, उमर, उशमान, अली)

चार वरन : लहणा देणा जाणे चार वरन अठारां बरन जमात, शत्तरी ब्रह्मण शूद्र वैश बचया कोई रहण ना पाईआ। (१७ सावण २०२१ बि)

चार वेद : मंज़ल चढ़ के कदी नहीं जाणा डिग, अगे चलणा वाहो दाहीआ। लेखा वेखो साम यजुर अथरबण रिग, चारे वेद देण गवाहीआ। (८ चेत श सं १) ब्रह्मा एका नाम समझाया, चारे मुख चारे वेदां करे ज्ञान। (७ माघ २०१७ बि)

चिड़ी : चीं चीं विच्च सभ चिड़ीआं नूं अंदर पैंदी हुका, जिस दी बोली बाहरों समझ किसे ना आईआ। सदा एह कहन्दीआं प्रभू साडा दाणा पाणी मुक्का, असां तेरी आस रखाईआ। मंगदीआं रहन्दीआं सुखां, साह साह ध्याईआ। (४ फग्गण श सं ३)

चुंच ज्ञान : (अमल रहित ज्ञान चर्चा)

चूहा : जल धार अंदर मनुष मानव मनुख पाणी भिज्जा चूहा, भज्ज सके ना वाहो दाहीआ। तत्त बुत माटी खाकी मेल निरगुण रूहा, रूप रंग रेख ना कोई समझाईआ। (१२ अस्सू २०२१ बि)

चूचा : रक्ख चित पारब्रह्म, गुरसिख चरन जिउँ कुकड़ी खंभां हेठ चूचा। (२ माघ २००६ बि)
पुरख अकाल दे हुक्म दी होण नहीं देणी हत्तक, हत्या होए लोकाईआ। गोबिन्द कोई चूचा नहीं बतख, शाहां दा शाह पातशाहां दा पातशाह नज़री आईआ। (२८ भादरों श सं १)

चौदां लोक : सत्त पताला खोल्ह़े दर, अतल वितल सितल तेरी घालया। राजे बल मंगया बल, सितल देस होए परवानया। तलातल चढ़े तेल अपार, मात वज्जे डंक अपार, रसातल धूंआधार महानया। सत्तवें करे आप विचार, लोक पताली करे चाली बाशक सेजा होई त्यार, सहँसर मुखड़े आप धुआ रिहा। सांगो पांगी लाल दुशाली, चार योजन खेल निराली, सच सिंघासण आप सवारया। लछमी प्रेम रक्खे फल डाल्ह़ी, हरि जी रक्खे हत्थीं खाली, असत बस्त शसत, ना तीर कोई उठा रिहा। धरत मात दी करे दलाली, कलिजुग बण के आए हाली, हरि साचा हल्ल बणा रिहा । कलिजुग सतिजुग बैल बणा

ली। शब्द हल्ल इक्क उठा ली, सोहँ फाला तिक्खा ला रिहा। पहली रहल आप मिला ली, मक्का मदीना करे खाली, पिछों ललकारा एका ला रिहा। फल ना दिस्से किसे डाली, चारे कुण्टां होईआ खाली, जगे जोत इक्क अकाली, नूर अलाही भेख वटा लिआ। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, सत्त पतालां वेख वखा रिहा।

सत्ते लोक मारे ध्यान। भू लोक आप भगवान। साचे खण्ड कवण असथान। दूवरलोक वेखे शब्द बिबाण। स्वर्गलोक हरि मेहरवान। महरलोक धर्म निशान। जवलोक अकल कल धार। तपलोक सपतम वेखे सति पुरख दा सच निशान। सतिलोक जोत महान। गुरमुख विरला नेत्र पेखे, लाल गुलाला रंग महान। दूसर किसे ना दिसे रेखे, भरमे भुल्ले जीव निधान। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, चौदां लोकां साचे अंदर इक्क वखाए शब्द निशान। शब्द निशाना नाम डोरी, पुरख अबिनाशी पाईआ। लक्ख चुरासी कोलों करे चोरी, कलिजुग रैण अन्धेर घोरी दिस किसे ना आईआ। (१८ हाढ़ २०१२ बि)

सम्मत चौदां सच दवारा, चौदां लोकां रिहा वखाईआ। भूअ दूवह स्वर्ग महर जप तप सति अवतारा, धाम भूमिका वेख वखाईआ। इतल वितल सितल तेरा पार किनारा, तलातल महातल रसातल खोज खुजाईआ। पाताल लोक प्रभ लै अवतारा, सांगो पांग बाशक सेज रिहा हंढाईआ। सहँसर मुख गुण दो सहँसर जिह्वा रिहा हिलाईआ। पुरख अबिनाशी खेल अपारा, जप लोक तप लोक बैठा मुख छुपाईआ। सत लोक प्रभ कर पसारा, सति पुरखा रंग वटाईआ। आदि शक्त इक्क आकारा, एका एक वखाईआ। कलिजुग तेरी अन्तम वारा, दस दसमेस जगाईआ। (२१ जेठ २०१४ बि)

दिल्ली तख़त हरि बराजना, पंचम मुख ताज सीस टिकाईआ। सत रंग निशान रचाया जगत काजना, लक्खण करौच पुशकर जम्बु सलमल सान कुशा दए वखाईआ। नौं खण्ड कराए एका जापना, कुलाखण्ड केत माल इलाबुत किं पुरख हरिवरख करे रुशनाईआ। हरण यमह तोड़े तापना, भदर रमक दए जणाईआ। भारत खण्ड प्रभ जोत करे वड परतापना, साचा मार्ग सुणाईआ। चौदां लोकां वेख वखावना, आप आपणा फेरा पाईआ। भूअ दूवह लोक देवे दानना, स्वर्ग महरर करे कुड़माईआ। जप तप इक्क वैरागना, सति सति दए वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्द जणाईआ।

एका शब्द हरि जणा, अतल वितल सितल पावे सारा। तलातल महातल सहातल रसातल एका नाम रखाया। पाताल कराए जै जैकारया बाशक सेजा आप सुहा, सांगो पांग दए हुलारा। लछमी लहणा झोली पा, चतुरभुज खेल अपारा। नर नरायण भेख वटा, लोकमात लए अवतारा। सतिजुग साची जोत जगा, चार वरन सुहाए इक्क दवारा। एका जाप दए जपा, एका नाम अधारा। (५ माघ २०१४ बि)

नाम खण्डा तीर किरपान, ब्रह्मण्डां होए सहाईआ। जेरज अंडा वेख वखान झूठ दुकान, चौदां हट्टां वेख वखाईआ। इतल वितल सितल हो मेहरावान, तलातल महातल रसातल पताल लोक करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी कल वरताईआ।

चौदां लोक चौदां तबक चौदां हरि हुलारा। चौदां खेल खेल तबरेज़ शमस, चौदां अल्ला राणी नाअरा। चौदां लोक चौदां हट्ट, चौदां चौदां होए खवारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग खेले खेल सिरजणहारा।

ब्रह्मा शिव देवत सुर, प्रभ साचे इक्क समझाया। रिख मुन साध सन्त जो बैठे जुड़, तीर्थ तट्टां लए उठाया। गुरदर मन्दर शिवदवाले जो रहे रुड़, पार कन्धु दए वखाया। लक्ख चुरासी वेखे परखे मिट्ठा कौड़ा, अंदर मन्दर खोज खोजाया। लेख लिखाए पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा, वेख वखाया। कलिजुग अन्तम जोत अकाली जोत सरूपी लोकमाती आया दौड़ा, शब्द डंका इक्क वजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तम वर, आप आपणा वेस वटाया। वेस वटाया हरि निरँकार, आपणे हत्थ रक्खी वडयाईआ। लोआं पुरीआं बंने धार, लोकमात वज्जे वधाईआ। सति सति पार किनार, सति सति वेख वखाईआ। भू लोक ख़बरदार, दूवर करे जणाईआ । स्वर्ग लोक कर प्यार, महरह नाम जपाईआ। जप लोक पार किनार, तप तपसी इक्क वखाईआ। सति लोक सति पुरख निरञ्जण सिरजणहार, बैठा बेपरवाहीआ। लोकमात आया सांझा यार, चार वरनां करे जणाईआ। नौं खण्ड पृथ्मी पावे सार, कुला खण्ड डेरा लाईआ । इलाबुत मारे मार, केतमाल वज्जी वधाईआ। हरणयमह वेख विचार, भदर खेल खिलाईआ। रमक रोवे ज़ारो ज़ार, हरिवरख फोल फोलाईआ। किं पुरख पावे सार, भारत खण्ड होए जै जैकार, सत्तां दीपां मेला नारी कन्त दर सुहाईआ। लक्खण दीप हो उजिआर, करौच फेरा पाईआ। पुशकर तेरी बंने धान, जम्बु दीप आप आपणा रंग वटाईआ। सलमल तेरा इक्क प्यार, भुल्ल रहे ना राईआ । शान तेरी बंने धार, एका गुण रखाईआ। कुशा वेख सच्ची सरकार, सीस साचा ताज पहनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तम वर, नौं सत दे मत इक्क तत्त रिहा समझाईआ । (१४ भादरों २०१५ बि) (सत्त आकाश अते सत्त पाताल)

चौदां रतन : पैहला रतन हरि निकाला। नाम विक्ख इक्क प्याला। शिवजी गल पाए कंठ माला। जोती जोत सरूप हरि, करे खेल जगत निराला। दूजा रतन हरि विरोले। काम धेन विच्चों बोले। अमृत सीर साचा कढ्ढु, प्रभ अबिनाशी मक्खण विच्चों कढ्ढु, साचे धाम आप बहाई, देवतयां दा कुण्डा खोल्हे। जोती जोत सरूप हरि, दूजा गेड़ा आप दवाया। तीजा रतन कढ्ढु वखाया। चिट्टा घोड़ा बाहर आया। दक्खण दिशा आप बहाया। जोत सरूपी जोत हरी, आपणा भाणा आपणे हत्थ रखाया। कढ्ढे रतन त्रैलोकी नाथी। बाहर निकलया ऐरापत हाथी। प्रभ साचे दा बणया साथी। पूरब दिशा खड़े खड़ोता दोए वक्त सीस झुकाया, खड़ा दर ते टेके मथ्था। पंजवां रतन कढ्ढे बाहरे। कलिजुग जीव होए गवारे। कवण जाणे तेरी खेल अपारे। सतिजुग करे खेल नयारे। जोती जोत सरूप हरि, सच सुच्च आपणा भेव आप खुल्हारे। साची करे खेल निराली। विच्चों निकल लछमी गल पाई फूलां माली। प्रभ अबिनाशी किरपा कर साचे धाम आप बहाली। अट्ठे पहर झसे चरन, दिवस रैण रहे मतवाली। जोती जोत सरूप हरि, आप करे रखवाली।

पूरन किरपा हरि साचे करी। बाहर आई अरम्भा परी। गंधरब वास में जाए तरी। साचा देवे वर हरी। आपणी किरपा आपे करी। नेत्रा चले वारो वार, अमृत कढ्ढी साची धार,

विच्चों मद होई बाहर, चक्कर सुदर्शन हरि हत्थ छुहाया, चारों कुण्ट फिराया सच्चा रतन आया बाहर, जोती जोत सरूप हरि, किरपा करी गिरवर गिरधारी। धरत मात हरि साचे तोली। (५ जेठ २०११ बि)

बाशक नाग दित्ता गेड़ा, आपे खिचे लाए गेड़ा, चौदां रतन कढ्ढे देवे आप अमोलया। चिट्टा घोड़ा ऐरापत हाथी काम धेन अमृत विख शराब मद बिरख पारजात। (६ चेंत २०११ बि) (चिट्टा घोड़ा, ऐरापत हाथी, काम धेन, अमृत, विख, शराब, बिरख पारजात, लछमी, रंभा अपसरा, चन्र्दमा, पांचजनय संख, धंटवन्तर, कौसभमण, सारंग धनुख),
गुर शब्द रतन अमोल, गुरमुख जणाईआ। (१ पोह २०१२ बि)

चौरासी लख जून : तीजा लै हरि अवतार। आपणे खेल करे अपार। यगे पुरुष नाम करतार। किआ कोई जाणे इस दी सार। आदि अन्त जुगा जुगन्त आपे करे आप अकार। जगत रीती आप चलाई। लक्ख चुरासी जिस उपाई। नौं लक्ख विच जल टिकाई। दस लक्ख अंडज विच्च रखाई। ग्यारां लक्ख ढिड भार रिड़ाई। वीह लक्ख बनास्पत उपाई। तीह लक्ख चार पाउँ लिखाई। चार लक्ख मानस देही उपजाई। आदि अन्त साचे भगवन्त आपणी खेल आपणे हत्थ रखाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तीजे जामे जग करन दी आपणी आप रीत चलाई। (५ जेठ २०११ बि)

चौवी अवतार : सतिजुग साचे पहली वारा। सनक सनंदन सनातन सन्त कुमारा। आपणा खेल आपे जाणे, पुरख अबिनाशी हरि निरँकारा। जोती जोत सरूप हरि, साचे धाम सदा वस्से, इक्क वखाए सच टिकाणा।
दूजा धारे भेख बराह नर निरँकारा। दुष्ट दैंत आप सँघारा। जोती जोत सरूप हरि, धरत मात सुण पुकार, यगै पुरुष तीजा अवतारा। कीआ भेख मात अपारा। जगत लगाई साची मेख, कीआ जगत अधारा। जोती जोत सरूप हरि, आवे जावे वारो वारा।
हाव गरीव चौथा अवतारा। लाल रंग कीआ करतारा। वेद पतालों आंदे बाहरा। कीआ भेख सिर कलगी, भेखाधारी भेख अपारा। जोती जोत सरूप हरि, आपे जाणे आपणी सारा।
नरायण नर पंचम अवतारा। आपे जाणे आपणी सार। सतिजुग साचे सहज सुभाए, आवे जावे खेल कराए, छिन्न छिन्न भेख वटाए नर निरँकार। जोती जोत सरूप हरि, एका रंग रंगे करतार।
अवतार छे कपल मुन तपीश्र। कीआ भेख प्रभ साचे ईशर। एका माता दए ज्ञान, जगत पित जगदीशर। जोती जोत सरूप हरि, आपणा भेख आप वटाए, विरला जाणे रिखी रिखीशर।
अवतार सतवां हरि जी लए, नाउँ रखाए दता त्रै। यदू बंस मात उपजाए, जोती जोत सरूप हरि, आदि अन्त एका जोती सदा अट्टल घर साचे रहे।
रिखग देव अशटम कल धार। मत उजैन धरे संसार। इक्क वखाणे साचा तत्त, देवे चरन प्यार। जोती जोत सरूप हरि, आवे जावे वारो वार।

प्रिथू रूप नौवां अवतारा। पुरख अबिनाशी लए करतारा। साचा दीआ इक्क ज्ञान, पिता पूत हरि पार उतारा। आत्म उपजया ब्रह्म ज्ञान, दूजा द्वैती मिटया धुंदूकारा। एका दस्सया सच निशान, जोती जोत सरूप हरि, एका रंगे रंग करतारा।

दसवां अवतार मतस गुरदेवा। साची जुगत करी कराई मात सेवा। साचा फल नाम खवाया, भए अलख अभेवा। जोती जोत सरूप हरि, आदि अन्त जुगा जुगन्त, एक जोती वड्डा वड्ड देवी देवा। कछप रूप ग्यारवां धार। सत्त समुंदर पावे सार। मंधरा चल प्रबत उठाए चुक्के पार। बाशक नाग लए जगाए, नेत्रां पाए अद्ध विचकार। साची अमृत जाग लगाए, समुंदर रिड़के हरि करतार। जोती जोत सरूप हरि, आपणा भेख मात कर, चौदां रतन कढ्ढे बाहर।

वैद धनंतर अवतार बारां। काया पिंजर जाणे अन्तर, खोल्हे भेव गुप्त जाहरा। पंज तत्ती वेखे बणी बणतर, हड्ड नाड़ मास पिंजर लहू मिझ गारा। जोती जोत सरूप हरि, जगत औशध आपे जाणे करे आप विहारा।

अवतार तेरवां हरि दातारी। मोहणी रूप खेल अपारी, राजे बल तेरी अन्तम वारी। आपे कीआ वल छल, अमृत प्याए, करोड़ तेतीस बणाए, पुरी इन्दर देवे सच्ची सरदारी। जोती जोत सरूप हरि, दूजे हत्थ मदिरा फड़ी कटोरी।

आप चौदवां भेख श्री भगवाना। हँसा रूप चतर सुजाना। तोड़े माण अभिमान, देवे साचा ब्रह्म ज्ञाना। रिखी मुनी करन ध्यान, पंखी उडे दह दिश जाना। सर्ब जीआं हरि आपे जाणे, करे जाण पछाणा। जोती जोत सरूप हरि, चिट्टा बाणा तन छुहाए, काग हँस भेख वटाए, करे रंग श्री भगवाना।

पंदरवां भेख हरि प्रभ कीता। भगत प्रहिलाद बणया साचा मीता। हरनाशक आप संघारया, गुरमुख साचा रिहा जीता। जोती जोत सरूप हरि, आपे आप चलाए, जगत साजन साची रीता।

बावन रूप सोलवां अवतारा। मंगण गिआ बल दवारा। सतिजुग साचे धरया भेख, वेद वखाणे हरि निरँकारा। करो अढाई मंगी धरत, शुकर प्रोहत नाल मिलाणा। जोती जोत सरूप हरि, अन्तम वेले दित्ता वर, कलिजुग अन्तम साढ्ढे तिन्न तेरा बणया फेर टिकाणा।

सतारवां भेख धरे अवतारे। बालक धरू प्रभ पार उतारे। नारद मुन मिल्या विच जूह, दस्से राह इक्क नयारे। सृष्ट सबाई डूंघा खूह, कोई ना दिसे पार किनारे। जोती जोत सरूप हरि, बिरध बाल जवान बाल अंञाणयां सदा सदा पाउँदा रहे सारे।

अठारवां भेख हरी हरि धार। आपे पाई गज प्रभ सार। शब्द वजे गराह तन्द दित्ती जड़्ह उखाड़। सभ दे पड़दे रिहा कज, आदि अन्त एका एकँकार। सतिजुग साचे विच मात वार अठारां हरि सज्जण मीत मुरार लए आप अवतार। सतिजुग भेख भेस गिआ वटा के, लोकमात जुगा त्रेता प्रगटाए। उनीआं अवतार कल छोटी धार परस राम आप अखवाए। वार इक्की कुल कशतरी देवे हार, हत्थ हथौड़ा इक्क उठाए। वल छल करे एका जोती अपर अपार, राम रूप हरि लए वटाए। जोती जोत सरूप हरि, त्रेते जुग अन्तम अन्त बीसवां अवतार आपे आप वटाए।

त्रेता जुग गिआ मुक्क। द्वापर मात आया ढुक। काया बूटा पिछला गिआ सुक। जोती

जोत सरूप हरि, आवे जावे जगत रहावे जोत प्रगटावे नित्त नवित, दया कमावे ना सके कदे रुक।

इक्कीआं अवतार वेद व्यासा। कुआरी कंनया दए दिलासा। मात बणाई कर कर हासा। आपे जाणे आप वखाणे आपणा जगत तमाशा। जोती जोत सरूप हरि, एका जोत सदा अट्टल ना होए कदे विनासा।

वेद व्यास जोत जगाए। अठारां पुरान लए लिखवाए। चार लक्ख सतारां हज़ार सलोक बणाए। ब्रह्म पुरान मुख रखाए। जोती जोत सरूप हरि, एका कल धार कर विचार, साचा शब्द आप लिखवाए।

अठारां हज़ार सलोक श्री भगवत गीता निहकलंक रिहा अलाए। जोती जोत सरूप हरि, आपणा भाणा आपे जाणे ना कोई सुणे ना कोई जणाए।

वेद व्यास बण लिखार। जोत निरञ्जण नर निरँकार। करे चरन निमस्कार। पुरख अबिनाशी किरपा धार। दूजी वार होए दीदार । मिल्या शब्द अपर अपार। होए मेल कलिजुग अन्तम वार। जोती जोत सरूप हरि, वेद व्यास उत्ते बिआस बणया आप लिखार।

बाईआं अवतार हरि कृष्न मुरारी। दवापर जोत जगाई त्रैलोकी नाथ नैण मुंधारी। गरीब निमाणयां देवे साथ, मारे दुष्ट कंस हँकारी। आप चलाए जन भगतां राथ, करे सच सवारी। इक्क चलाए साची गाथ, देवे ब्रह्म ज्ञान अरजन हरि अपारी। सगल वसूरे जाइण लाथ, अठारां ध्याए गीता एका आप उच्चारी। जोती जोत सरूप हरि, आपे जाणे आपणा भेख जगत लेख आवे जावे वारो वारी।

आवण जावण खेल अपार। लोकमात हरि वारो वार। जन भगतां देवे साची दात, देंदा रहे नाम भंडार। एका दिस्से उत्तम जात, चरन कँवल प्रीती साची धार। मिले वड्डिआई विच मात, गुर पूरे जाओ सद निमस्कार। अमरा पद अन्तम पाओ, जाओ सच दवार। गुरमुख साचे सन्त जनां घर साचे सद लिआओ, मेल मिलाओ पुरख अगम्म अपार। जोती जोत सरूप हरि, आप कराए जुगो जुग जन भगतां सच्चा वणज वपार।

दवापर तेरा चुकया गेड़ा। कलिजुग मात छिड़या झेड़ा। करया खेल हरि आपे, महात्मा बुद्ध करे निबेड़ा। अवतार तेईआं आप उपजाए जोत जगाए वसाया काया नगर खेड़ा।

गौतम बुद्ध बुध बल धार। पहली कीनी आत्म सुध, पुरख अबिनाशी करी विचार। दूजी आई मात सुध, एका दूजा भउ निवार। पंजां तत्तां नाल करया युद्ध, अन्तम तीजे आई हार। चौथे आत्म रस रिहा गुध, हँकारी तुट्टा आत्म बुख़ार। पंजवें सोया उठया कुद, अमृत वेख ठंडी धार। जोती जोत सरूप हरि, आपणे खेल करे कराए विच संसार।

साचा नाम इक्क जपाया। गऊ गरीब निमाणा गले लगाया । छड्डे तख़त राज सिँघासण राणीआं, अलख निरञ्जण भेख वटाया। जीआं जंतां दस्से साची बाणीआं, मदिरा मास दए तजाया। जोती जोत सरूप हरि, साचा खेल आपणे हत्थ रखवाया।

ईसा मूसा हरि उपजाइंदा। कलिजुग तेरे साचे संगी, मात धार बणाइंदा। घर साचे मंगे इक्क मंगी, साचा संग निभाइंदा। संग मुहम्मद चार यार कलिजुग तेरी कटी तंगी, हत्थ नाल हत्थ मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग तेरी अन्तम वार, वाहवा सोहणा जोड़ जुड़ाइंदा।

खेल करे हरि करतारा। जीआं जंतां पावे सारा। मातलोक हरि दया कमाए, गुर नानक आए कल धारा। जोती जोत सरूप हरि, सच शब्द हरि झोली पाए, सतिनाम जगत भंडारा। साचा नाम जगत भंडारा। चारों कुण्ट आपे वंडे चार उदासी गुर निरँकारा। कलिजुग जीव घर घर करन हासी, भुल्ले फिरे मूर्ख मुगध गवारा। गुरमुखां विरला जाणे शब्द पछाणे रसना गाए स्वास स्वासी, नाम सति साची धारा। आप समझाए पंडत काशी, जगी जोत मात अपारा। जोती जोत सरूप हरि, माया पड़दा जगत पाए, कोई ना पाए साची सारा। जामे दस जोत जगाए। अन्तम बैठा भेख छुपाए। गुरमुख साचे सन्त जन, एका साची सेव लगाए। जोती जोत सरूप हरि, साचा देवे नाम धन, अन्तम बेड़ा देवे बंन्ह, एका ध्यान गुर चरन टेक रखाए।

गुर चरन टेक सच ध्याना। अन्तम होवे बुध बबेक, एका उपजे ब्रह्म ज्ञाना। बज़र कपाटी करे छेक, वज्जे तीर शब्द निशाना। माया अगन ना लाए सेक, शब्द बंन्हे साचा गाना। जोती जोत सरूप हरि, सच सुनेहड़ा देवे घल, करे खेल जल थल।

जन भगतां करे साचा मेल, बेमुख भुलाए कर कर वल छल। जोती जोत सरूप हरि, एका वसे साचे धाम, रहे सदा अट्टल।

साचा शब्द जगत गुर दात। देवे साची वथ हत्थ लोकमात वड्डी दात। गुरमुख चढ़ाए साचे रथ, आपे पुछे अन्तम वात। जोती जोत सरूप हरि, साचा लेखा आप लिखाए, सिर रक्खे दे कर हाथ।

जोत निरञ्जण जोत जगाए। सतिगुर साचा मात उपजाए। निरगुण सरगुण एका जोती सरगुण भेख मात वटाए। जोती जोत सरूप हरि, आपणा भाणा आपे जाणे जीवां जंतां आपे समझाए।

सरगुण रूप सदा विच मात। निज घर निरगुण रूप रक्खे वास। आपे जाणे आपा आप। सरगुण रूप सर्ब वखाणे, जगत जपाए साचा जाप। खड़ा रहे सद सरहाणे, मेट मिटाए तीनो ताप। गुरमुख साचा रंग साचे माणे, कोटन कोट उतरे पाप। आप चलाए आपणे भाणे, गुर पूरा वड्ड प्रताप। कोई ना वेखे राजे राणे, गुरमुख साचे बाल अंञाणे, आपे बणे माई बाप। सतिगुर साचा सच वखाणे, भगत जनां दी आपे जाणे, इक्क जपाए साचा जाप। जोती जोत सरूप हरि, आपणी किरपा रिहा कर, पुरख अबिनाशी आपे आप।

निरगुण रूप नर निरँकारा। सद वस्से आपणे आप सहारा। लोकमात राह साचा दस्से, सरगुण रूप लए अवतारा। जन भगतां आत्म सदा रसे, खोल्हे बन्द कवाड़ा। शब्द बाण साचा कस्से, पंजां चोरां मार मिटाए, पिच्छेहटाए झूठी धाड़ा। साचा राह एका दस्से, आत्म जोती काया नाड़ा। जोत सरूपी अंदर वसे, दिवस रैण अठ्ठे पहर लगा रहे सच अखाड़ा। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे सन्त जनां, आत्म दर साचा खोल्हे, शब्द सरूपी विच्चों बोले, फिरदा रहे सद पिच्छे अगाड़ा।

सरगुण रूप सदा सुखदेवा। लोकमात हरि नाम जपाए, रसना फल खवाए अमृत मेवा। गुरमुख साचे आप जगाए, मस्तक लाए शब्द थेवा। फड़ फड़ बाहों राहे पाए, आप कराए साची सेवा। दरस दिखाए थाउँ थाईं, नाम जपाए साची जिह्वा। जोती जोत सरूप हरि,

साची दया आप कमाए, सतिगुर साचा आप उपजाए, जीआं जंतां रिहा समझाए, आप लगाए साची सेवा।

सतिजुग साचा साची सेव कमाए, चरन प्रीती एका लग्गी नाल पुरख गोपाले। हरि पहनाए सिर सग्गी, उत्ते देवे शब्द दुशाले। जोत लोकमात जगी, मिटे अन्धेर कलिजुग काले। सृष्ट सबाई अन्तम दगी, ना दिसे किसे राह सुखाले। जोती जोत सरूप हरि, सतिगुर साचे विच मात आपे पाले।

गुर सतिगुर सूरा जगत वरयाम। प्रभ शब्द कराए पड़दा काया चाम। घर साचे मिले एका जोती नूरा, मिटे अन्धेरी रैण जगत शाम। जोती जोत सरूप हरि, अन्तम अन्त कल आपणे पूर कराए आपे काम।

कलिजुग बली बलवाना। मात मिटाए गुर पीर शाह सुल्ताना। दर दर घर घर लाहुंदा फिरे जीव, कोई ना छड्डे ख़ाली ख़ाना। जोती जोत सरूप हरि, आपणा रंग आपे जाणे वेले अन्त श्री भगवाना ।

काया माटी खाए काल। जगत तुट्टे नाती, तुट्टे माया जाल। ना कोई पुच्छे किसे बाकी, खाली होए खाल। जोती जोत सरूप हरि, एका वस्त रक्खे दस्त रक्खे सद संभाल।

गुर पीर जगत अवतारा। अन्तम सुत्ते पैर पसारा। कोई ना आए दूजी वारा। जगत नाम फेर धराए, जोत जगाए आदि अन्त वारो वारा। जोती जोत सरूप हरि, आपे आप करन करावणहारा।

काया चोली माटी डोली। अन्तम सुत्ती भोली भाली। जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग तेरे अन्तम वेले लक्ख चुरासी कीनी गोली। पीर पैगम्बर सयद मुलाणा। मीरी पीरी पीर फकीरी शाह हकीरी, मन्नणा पए साचा भाणा। तन किसे ना रहे चीरी, मिटे निशान राजा राणा। कलिजुग तेरा अन्तम अन्त अखीरी, निहकलंकी पहरे बाणा। निहकलंकी शब्द अमोला। पैहलों छड्डया काया चोला। फेर सुणाया सोहँ ढोला। भरम भुलेखा गुरमुख साचे सन्तां आत्म खोल्हा। मेल मिलावा साचे कन्ता, होया जगत विचोला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतार, चौवीआं वार मातलोक लक्ख चुरासी खेडण आया एका अन्तम होला।

नेहकलंक शब्द वणजारा। वेखे परखे परखे वेखे, घाड़न घड़े सच्चा सुनयारा। जन भगतां अमृत मेघ सद बरखे, काया करे ठंडी ठारा। गुरमुख साचा कदे ना हरखे, आपे करे कराए, जगत वरताए आपणी धारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगत भिखारी आपे बणया, करदा जाए वणज वपारा। (१७ हाढ़ २०११ बि)

चंगी गल्ल : सची गल्ल : चंगी गल्ल आत्म परमात्म रंग, दुरमत मैल रहण ना पाईआ। धुन आत्मक शब्द अनाद वजे मरदंग, अगम्मी राग सुणाईआ। कूड़ी क्रिया हउमे हंगता काम क्रोध लोभ मोह हँकार टुट्टे संग, जूठ झूठ रहण ना पाईआ। सच प्रकाश जोती नूर चढ़े चन्द, अज्ञान अन्धेर दए मिटाईआ। निज आत्म निज घर मिले इक्क अनन्द, बूंद स्वांती अमृत झिरना निझर दए झिराईआ। दूई द्वैत भउ भरम ढए कंध, मन मनका दए भवाईआ । साची धार सति सरोवर काया गृह वगे गंग, रस इक्को इक्क चवाईआ। पतिपरमेश्वर पुरख

अकाल दीन दयाल वसे संग, सगला संगी अंगीकार अंग लगाईआ। सुरत सवाणी जगत दुहागण ना रहे रंड, कन्त वडभागी मिल मिल खुशी मनाईआ । जिन्हां गुरमुखां सतिगुरू दी चंगी गल्ल आ गई पसंद, उहनां दी पुशत पनाह गुर आपणा हत्थ टिकाईआ। चंगी गल्ल मारना मन, मनसा मन ही माहें खपाईआ। चंगी गल्ल गुरमुखां संग, गुरसिखां मिल मिल खुशी मनाईआ। चंगी गल्ल भगतां कोलों भगवान नूं मिलण दा सिक्खणा ढंग, तरीका धुर दा देण समझाईआ। चंगी गल्ल तन रबाब वजौणी तन्द, सारंग बहत्तर नाड़ बणाईआ। चंगी गल्ल नौ दवारे पार वेखणा लंघ, शाह रग दे उप्पर दर्शन पाईआ। चंगी गल्ल झगड़ा मकौणा जेरज अंड, उत्भुज सेतज ढेरी ढाईआ। चंगी गल्ल सैर करना ब्रह्मण्ड खण्ड, पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर वेख वखाईआ। चंगी गल्ल सतिगुर शब्द दा सुणना छन्द, जो धुर दा ढोला दए सुणाईआ। चंगी गल्ल मेल मिलौणा निवासी सचखण्ड, जो घट घट अंदर रिहा समाईआ। जे चंगी गल्ल आ जाए इक्क पसंद, अगला पिछला लेखा रहण ना पाईआ। चंगी गल जे प्रभ नूं समझो मीत, मित्र प्यारा नज़री आईआ। साची सिख लउ रीत, सोहणी मिले वडयाईआ। चंगी गल्ल अंदरों बदल जाए नीत, कुटलता मन दए गवाईआ। चंगी गल्ल आत्मा परमात्मा दा गावे गीत, दूजा राग ना कोई शनवाईआ। चंगी गल्ल प्रेम प्यार नीचां नीच, ज़ात पात दीन मज़हब झगड़ा ना कोई रखाईआ । चंगी गल्ल सतिगुर शब्द पैगम्बर कलमा हज़रत हदीस, सच करे पढ़ाईआ। चंगी गल्ल धुर फरमाना मन्ने ठीक, कूड़ा ठीकर तन भन्नाईआ। चंगी गल्ल झगड़ा चुक जाए मन्दर मसीत, काया काअबा दो दोआबा वेख वखाईआ। चंगी गल्ल गुर अवतार पीर पैगम्बर शास्त्र सिमरत वेद पुरान अंजील क़ुरान गीता ज्ञान खाणी बाणी कर के गए नसीहत, धुर दा हुक्म सुणाईआ। चंगी गल्ल जे आपणे विच्चों आपणी आत्मा दी लभ लउ असलीअत, असल हरि हरि नज़री आईआ । चंगी गल्ल जे आपणी जाण लउ वलदीअत, पुरख अकाल सभ दा पिता माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ।

चंगी गल्ल जे गुरसिख करे मनज़ूर, अन्तर अन्तर ध्यान लगाईआ। देवणहार प्रभू भरपूर, अतोट अतुट वरताईआ। कर्म कांड पूरब जन्म कर्म दे कट क़सूर, कसर इशारीआ नाल वटाईआ। आत्म परमात्म बख्श के सच सरूर, नाम खुमारी दए चढ़ाईआ। कूड़ी क्रिया कढ के ग़रूर, हउमे हंगता गढ़ तुड़ाईआ। निर्मल जोती दीआ बाती घर कमलापाती बख्शे नूर, सच उजाला इक्क वखाईआ। नाद धुन राग अगम्मी काया तत्त वजाए तम्बुर, तूं ही तूं ही राग दए सुणाईआ। मन वासना उडा के मन कफ़ूर, बुद्धि बिबेक दए जणाईआ। दरस दिखाए हो के हाज़र हज़ूर, स्वच्छ सरूपी अनरंग रूपी शाहो भूपी बजर कपाटी पर्दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सची गल्ल सच्चा नाम इक्क समझाईआ।

सची गल्ल सच्चा नाम, जो लिखण पढ़न विच्च कदे ना आइंदा। चार जुग जिस दे ग़ुलाम, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग सेव कमाइंदा । गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस दा गावण गाण, रसना जेहवा बत्ती दन्द सिफ्त सलाइंदा। जगत नेत्र नज़र ना आए किसे निशान, दृष्ट इष्ट ना कोई खुल्हाइंदा। जिस दी कलमयां तों बाहर कलाम, कायनात विच्च जानणा नहीं

आसान, आलम उलमा भेव कोई ना पाइंदा। देवणहार वड मेहरवान, मिहबान बीदो बीख़ैर या अलाह इल्लाही नूर आपणा हुक्म वरताइंदा। मुकामे हक जिस दा निशान, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी आपणी खेल कराइंदा । सची गल्ल जिस जाण लई विच्च जहान, तिन्नां दवारे महमान पुरख अबिनाशी आपे फेरा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पर्दा उहला आप चुकाइंदा।

सची गल्ल सुण लै सच सतिगुर, सच सच दृढ़ाईआ। काया माटी पंज तत्त, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश बंधन दित्ता पाईआ। वस्त अमोलक काया गोलक अगम्मी ढक , पड़दा लिआ रखाईआ। सृष्ट सबाई मन वासना चार कुण्ट दह दिशा रही नट्ठ, उतर पूरब पच्छिम दक्खण फेरा पाईआ। राज राजान शाह सुल्तान कोई ना सके लभ, जगत विद्या खोज ना कोई खुजाईआ। साहिब सतिगुर दीन दयाल हो किरपाल, सिँघ किरपाल जिस नूं साची गल्ल दए दस्स, तिन्नां दह दिशा इक्को नज़री आईआ। हिरदे हरि हरि का रूप हो के जाए वस, नाम निधान मारे सट्ट, निज नेत्र खोल्ले अक्ख, प्रगट होए परतख, जोत कर प्रकाश मण्डल रास, गोपी काहन सीता राम गोबिन्द निशान नानक सतिनाम रूपन रूप महान आपणा दए वखाईआ। सची गल्ल कहे जे कोई मैनूं मंगे, चंगी तरां दिआं जणाईआ। दो अक्खां वाले मैनूं जगत जहान दिसदे अंन्ने, निज नेत्र प्रभ सच्चा नज़री आईआ। कर किरपा जिस ने घर भोग लगाया धन्ने, बिदर सुदामे दिती वडयाईआ। उह ठाकर स्वामी साहिब सभ दीआं मन्ने, जो सची गल्ल सुण के खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करनी दा मालक इक्क अखवाईआ।

चंगी गल्ल कहे मेरी चंगी बात, मंदयां चंगे देवां बणाईआ। कलिजुग वेख अन्धेरी रात, चारों कुण्ट मेरी अक्ख शरमाईआ। मैनूं औं दिसदा जिवें सारे प्रभू दी ज़ात, परमात्मा बैठे भुलाईआ। रसना जेहवा बत्ती दन्द पढ़दे गाथ, ढोले रागाँ नादां नाल सुणाईआ । सची गल्ल कहे सति सुण के मन्न के विच्च होया ना कोई विस्माद, बिस्मिल रूप ना कोई वटाईआ। जिन्नां गुरमुखां भगतां सन्तां सूफ़ीआं प्रभू दी सची गल्ल रक्खी याद, तिन्नां दी यादाशत अबिनाशी करते ना कदे भुलाईआ। सची गल्ल पिच्छे काया खेड़ा होया आबाद, गृह मन्दर वज्जे वधाईआ। जे पूरा सच दस्सीए फेर होणा पए नराज, जगत जगिआसूआं पूरी गल्ल सची किसे ना भाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सची गल्ल इक्को आपणा नाम दए समझाईआ।

सची गल्ल प्रभ का नाम, रहीम इक्को नज़री आइंदा। सची गल्ल धुर दा जाम, सति प्याला आप प्याइंदा। सची गल्ल निरगुण निरवैर निराकार राम, रूप रंग रेख ना कोई वटाइंदा। सची गल्ल धुर दरगाही पैग़ाम, इलहाम आपणी कार कमाइंदा। सची गल्ल सच निशान, दो जहान इक्को इक्क वखाइंदा। सची गल्ल जे घर आए महमान लउ पहचान, पर्दा उहला होर ना कोई वखाइंदा। प्रभ नूं मिलणा मंज़ल चढ़ना दर्शन करना हो जावे आसान, मुशकल सारी हल कराइंदा। सची गल्ल प्रभ दा सच्चा कलमा ते सची कलाम, सच्चा नाम इक्को इक्क दरसाइंदा। सची गल्ल हज़रतां पीरां पैगम्बरां गुर अवतारां भगतां सन्तां मन्नी इक्क जहान, दूजा सची गल्ल आपणे अंदर ना कोई वसाइंदा। सची गल्ल उहनां देवे माण, जिन्नां तुटे हँकार अभिमान, प्रभू साख्यात मिले आण, आत्म परमात्म वजे वधाईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सची गल्ल सच कर वखाईआ।

सची गल्ल कहे सच प्रभ एक, एकँकार नज़री आईआ। आदि जुगादि जिस दी टेक, जुग चौकड़ी होए सहाईआ। जिस दा रूप अनूप अनेक, अनक कलधारी खेल खलाईआ। जोती जाता धर के भेस, नर नरेश फेरा पाईआ। शब्द संदेशा देवे देस परदेस, नव नौ चार रिहा सुणाईआ। भगत सुहेलयां करे हेत, हितकारी हो के वेख वखाईआ। सची गल्ल सुणन वालयां दी मौले रुत महीना चेत, आत्म फुलवाड़ी गुलशन वाले गुल आपे दए खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दसावणहारा सच दर, सची गल्ल इक्क समझाईआ।

सची गल्ल कहे मेरा डूंघा राज़, बिन सतिगुर पूरे भेव कोई ना पाइंदा। मैं हत्थ ना आवां पढ़यां निमाज़, रोज़यां विच्च बन्द ना कोई कराइंदा। पाठां विच्च ना मेरा स्वाद, तीर्थ तट्टां हट्ट ना कोई विकाइंदा। मन्दरां मस्जिदां विच्च ना देवां साथ, शिवदवाले मठ मेरा राग ना कोई अलाइंदा। किरपानिध ठाकर स्वामी जिन्हां नूं सची गल्ल सुणावे आप, आपणा हुक्म वरताइंदा। तिन्हां दा रूह बुत हो जाए पाक, जन्म ज़मीर आप बदलाइंदा। सची गल्ल सुणन दा गुरमुख विरले लोकमात मिले इतफ़ाक, नफ़ाक विच्च सृष्ट सबाई वखाइंदा। सची गल्ल कहे जे मैं सच कहां आज, जगत समाज मेरा संग ना कोई रखाइंदा। सची गल्ल प्रभू चरन प्यार सची दात, दयावान दयानिध इक्को इक्क समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साहिब स्वामी अन्तरजामी, घट जानत बेपहचानत, नूर नुराना मर्द मरदाना हरि दाता महबूब मुहब्बत विच्च आप सुणाइंदा।

सची गल्ल कहे मैं ऐडी वडी, चार जुग मैनूं गए ध्याईआ। पुरख अकाल ने आपणी धार विच्चों कढ्ढी, दो जहान सोभा पाईआ। ना मैं बुढ्ढी ना मैं नढ्ढी, जोबनवन्ती इक्को रंग समाईआ। ना मेरी पसली ना मेरी हड्डी, तत्तां वाला वजूद ना कोई रखाईआ। मैं कोई किसे दी सांभी नहीं गद्दी, आसा तृष्ना जगत ना कोई जणाईआ। मैं जदों करां गल्ल सची ते हकी, हक़ीक़त विच्चों दिआं दृढ़ाईआ। सतिगुर दी सची गल्ल कदे ना होवे शक़ी, शकाइत शिकवे सारे दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ।

सची गल्ल कहे मैं बड़ी डूंघी, लम्भया हत्थ किसे ना आईआ। सृष्टी विच्च मैं बणी रही गूंगी, बिन गुरमुखां किसे नूं बचन ना कोई सुणाईआ। मैं सुत्ती रही मूदी, आपणी लई ना कोई अंगढ़ाईआ । मैं किसे हत्थ ना आवां ढूंडी, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ टिल्ले पर्बत समुंद सागर खोजण थाउँ थाईंआ। जिथ्थे इक्क आवाज़ आवे तूं तूं दी, उथे आपणा फेरा लवां पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सची गल्ल जिस नूं कहन्दे शब्द अटल, ब्रह्मण्ड खण्ड ना जाए हल, लक्ख चुरासी जीव जंत साध सन्त सची गल्ल पिच्छे सचे रब नूं लभ्भण थाउँ थाईंआ।

सची गल्ल जे मैं ना औंदी जग, लोकमात लैंदी अंगढ़ाईआ। सारी सृष्टी दा रूप हो जांदा कग, हँस माणक मोती चोग ना कोई चुगाईआ। साढे तिन्न हत्थ काया मन्दर अंदर लगी रहन्दी अग्ग, अमृत मेघ ना कोई बरसाईआ। मन वासना जीव जंत जांदे नच, सति सति ना कोई दृढ़ाईआ। एह थोड़ी जिही वस्तू प्रभू ने रक्खी आपणे हत्थ, दूसरे हत्थ ना किसे फड़ाईआ। जिस वेले जन भगत तेरा प्रगटे वत, उहनां नूं आपणी सिद्धी गल्ल दए

प्रगटाईआ। जन भगतो तुहाढ्ढी काया मन्दर अंदर खोल्ह के हट्ट, आपणा नाम दिआं टिकाईआ। वेखयो उहनूं ना दिउ दस्स, जेहड़ा मेरा नाम सुण के मैथों मुख भवाईआ। एह भगतां दा हक, हाकम हो के झोली दिती भराईआ। जे सची गल्ल पुछ के सच लभ्भण दी आस, एह वी तृष्ना तृखा दए बुझाईआ। जे बुद्धि नाल करो किआस, क़िसमत देवे उलटाईआ। जे गल्लां वाला सवाल जवाब, ते वल छल कर के आपणा खेल कराईआ। सच गल्ल कहे मैं ओसे दा प्रताप, जिस ने मैनूं लोकमात दिती वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच गल्ल सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी गुर परमेश्वर आप समझाईआ। (१६ चेत शहनशाही सम्मत १)

चंडाल : आत्म विकार हँकार काम क्रोध लोभ मोह चंडाल गवाओ। (६ जेठ २०११ बि)

चन्दोआ : एह चन्दोआ नहीं मनज़ूर, जो तणीआं नाल बंधाईआ। हरि का चन्दोआ इक्को नूर, नज़र किसे ना आईआ। ना नेड़े ना दूर, गुरमुख दे हिरदे विच्च रखाईआ। प्रेम प्रीती विच्च गुरमुख होए मज़बूर, आपणी आप सुध रहे ना राईआ। ना कोई ग़ुसा गिला ना कसूर, ना कोई झिड़के फड़ के बाहींआ। साहिब सच्चे दा इक्को दस्तूर, भुल्लयां भटकयां आपणी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचे घर लगाए इक्क चन्दोआ, आदि जुगादि रहे नरोआ, तणी कन्नी तन्द डोरी कुण्डा ना कोई रखवाईआ।

इस चन्दोए उत्ते आकाश, आपणा रंग वखवाईआ। इस चन्दोए उत्ते चन्द सूरज प्रकाश, उप्पर नहुण वाहो दाहीआ। इस चन्दोए उत्ते विष्न ब्रह्मा शिव करन नाच, मुख आपणा घुंगट लाहीआ। इस चन्दोए दे गुर अवतार पीर पैगम्बर कीते अरदास, लोकमात रहण कोई ना पाईआ। एह चदोआ प्रभ अबिनाशी दी दस्से याद, श्री भगवान इक्को छत्तर सीस झुलाईआ। साहिब सतिगुर दा चन्दोआ ख़ास, सूई धागा दरज़ी ना कोई सवाईआ। उस दे उत्ते होर कोई ना पावे रास, सारे बैठे थल्ले आसण लाईआ। सो चन्दोआ साहिब सतिगुर सदा रक्खे आपणे पास, जन भगतां उप्पर दए लगाईआ। जिस दे थल्ले गुरमुख करन निवास, तत्ती वा ना लागे राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, उह चन्दोआ साचा चन्दन, जेहड़ा प्रभ नूं करे दोए जोड़ बन्दन, बन्दा तत्त तत्त नज़र कोई ना आईआ। (२६ चेत २०२० बि)

छुट्टी : हरि संगत ना मंगो छुट्टी, छुट्टी नूं खुशी विच्च लउ बदलाईआ। बड़यां चिरां पिच्छों तुहाढ्ढी गंढी टुट्टी, नाता धुर दा लिआ बणाईआ। (२० हाढ़ श सं १)
अन्त एस जग्ग नूं चले छोड़, छुट्टी जगत लोकाईआ। मटकी देणी फोड़, भाण्डा तन भन नाईआ। ओथे जाणा बौहड़, जिथ्थे बौहड़ी बौहड़ी करदा नज़र कोई ना आईआ। (१ मध्घर श सं २)

छब्बी पोह : जगत जंजाला माया धरोह। कलिजुग जीव कंगाल, जगत नाता झूठा मोह। ना रिहा वक्त संभाल, अठ्ठे पहर रिहा रो। अन्तम वेले होए कंगाल, पल्ले धन्न ना दिसे को। डूंघी कंदर मारे छाल, दर सच्चे ना सके छोह। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, आपणी काया आप तजाई, वीह सौ बिक्रमी छब्बी पोह।
छब्बी पोह देह तजाई। अचरज़ खेल हरि वरताई। चार महीने नौं दिन गिण गिण लंघाई। जोती जोत सरूप हरि, पंचम जेठ अचरज़ खेल मात वरताई। (७ जेठ २०११ बि)

गुरमुख साजण तेरी साची लोअ, लोकमात करे रुशनाईआ। हरि बिन अवर ना जाणे को, ना कोई वेखे वेख वखाईआ। लक्ख चुरासी रही रो, नेत्र नीर वहाईआ। जूठा झूठा लग्गा मोह, पंच विकार वज्जी वधाईआ। गुरमुख विरला भेव ना जाणे सो, सो पुरख निरञ्जण रिहा जपाईआ। आपणा आप तजाया छब्बी पोह, गुरसिखां अग्गे भेट कराईआ। जोती जामा प्रगट हो, हँ हंगता दए मिटाईआ। पुरख निरञ्जण सरगुण निरगुण एका दो, दोआ एका रूप वटाया। गुर गोबिन्दा फड़ अग्गे लिआ जोह, साचा रथ साचा शब्द चलाईआ। जन भगतां आत्म अंदर बी रिहा बो, तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। दुरमत मैल कढ्ढे धो, नाम रंगण इक्क चढ़ाईआ। आपे करे कराए सोई कल हो, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जोत निरञ्जण करे लोअ, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला सहज सुभाईआ। (१७ चेत २०१४ बि)

छब्बी पोह लेख अव्वला, हरि साचे आप कराया। सम्बल नगरी सच महल्ला, गोबिन्द गढ़ सुहाया। सच दवारा आपे मल्ला, आप आपणी अलक्ख जगाया। नाम कटारा एका भल्ला, एका खण्डा हत्थ उठाया। एका बोलणहारा हल्ला, इक्क ललकार रिहा लगाया। इक्क इकल्ला आप आपणे विच्च रल्ला, हर घट बैठा आसण लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लोकमात वंड वंडाया। (२६ पोह २०१४ बि)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊